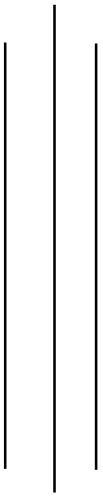
।। श्री गुरुदेवाय नमः।।

सन् 1947 से 2010 के मध्य लिखे गए

लोकप्रिय, प्रशंसित, प्रकाशित व प्रसारित

– अमर गीतों का संग्रह –

नींव के पत्थर



पुरुषोत्तम दास 'निर्मल'

प्रकाशन तिथि : स्वतंत्रता दिवस

15 अगस्त, 2010

अमर ज्योति प्रकाशन

नारनौल (हरियाणा)

आवरण : विवेक निर्मल

मूल्य : 100.00 रूपये

प्रथम संस्करण (400 प्रतियाँ) 2010 © पुरुषोत्तम दास 'निर्मल'

NEEV KE PATHAR by Purushottam Dass Nirmal

मुद्रक : अभिषेक प्रैस, अम्बाला छावनी–133 001

प्राक्कथन

राज्य में साहित्यिक परिवेश का निर्माण करने तथा नवोदित लेखकों को प्रोत्साहित करने हेतु हरियाणा साहित्य अकादमी द्वारा विभिन्न साहित्यिक योजनाएं कार्यान्वित की जा रही है। इन योजनाओं में पुस्तक प्रकाशनार्थ सहायतानुदान योजना भी सम्मिलित है। हरियाणा राज्य के जो लेखक हिन्दी एवं हरियाणवी में साहित्य रचना करते हैं, उन्हें अपनी अप्रकाशित पुस्तकों के प्रकाशन के लिए प्रस्तुत योजना के अन्तर्गत आर्थिक सहयोग प्रदान किया जाता है।

वर्ष 2009-10 के दौरान आयोजित पुस्तक प्रकाशनार्थ सहायतानुदान योजना के अन्तर्गत श्री पुरूषोत्तम दास 'निर्मल' की **नींव के पत्थर** शीर्षक पांडुलिपि को अनुदान के लिए स्तरीय पाया गया है।

आशा है सुधी पाठकों द्वारा लेखक के इस सफल प्रयास का स्वागत किया जायेगा।

-डॉ. मुक्ता

निदेशक, हरियाणा साहित्य अकादमी

अग्रेषण

साहित्य प्रेमी तीन प्रकार के होते हैं साहित्य-जीवी , साहित्य सेवी और साहित्य भोगी। साहित्य-जीवी आत्म तुष्टि के लिए निर्विराम लिखते रहते हैं। वो साहित्य सृजन के बिना रह नहीं सकते। साहित्य सेवी पाठक, श्रोता और समीक्षक के रूप में साहित्य की सेवा करते रहते हैं। साहित्यभोगी केवल लंच, मंच और धनोपार्जन के लिए लिखते हैं। साहित्यजीवी और साहित्यसेवी, साहित्य की प्रतिष्ठा को मान्यता देते हैं जबकि साहित्य भोगी लोकरंजन और धनोपार्जन को ही महत्ता देते हैं।

महाकाव्यकार के रूप में इतिहास में स्थापित श्री पी.डी. निर्मल को, उनकी साहित्यिक सेवाओं को देखते हुए साहित्य जीवी साहित्यकार के रूप में सरलता से मान्यता दी जा सकती है। उनके साहित्य को प्रथम दृष्ट्या आदर्शोन्मुखी, यथार्थवादी, कलात्मक और अमर साहित्य के रूप में गिना जा सकता है।

श्री पी.डी. निर्मल की रचनाओं का नवीनतम संग्रह, जिसका प्रकाशन सन् 2010 में होने जा रहा है, रंग-बिरंगे मनोभावों, रसों और कलात्मकता के विविध चित्रों से अवगुंठित है। इनकी चयनित छियेत्तर (76) रचनाओं में निम्नलिखित काव्यगत विशेषताएं प्रस्फुटित होती हैं :- देशभक्ति, राष्ट्रीय चेतना, शहीदों के प्रति श्रद्धा, समाधान सहित व्यंग्य, राष्ट्रीय एकता, सांस्कृतिक वैविध्य, आदर्शोन्मुखी यथार्थ, आशावादी दृष्टिकोण, राष्ट्र निर्माण में साहित्य के सहयोग, कटु यथार्थ, श्रम की प्रतिष्ठा, सदोपदेश, प्रेम का महत्व, दार्शनिकता, नारी के विविध रूपों का सटीक विश्लेषण, दायित्व बोध, देश की समस्याओं के प्रति लगाव आदि आदि.....।

प्रस्तुत काव्य संकलन में भाषा की सरलता, शब्द सामर्थ्य, अलंकारों का सरल और स्वाभाविक प्रयोग तथा सहज रस-निष्पति दर्शनीय है। कुछेक प्रमाण प्रस्तुत किए जाते हैं ताकि पाठक, समीक्षक और श्रोतागण इनका रसास्वादन कर सकें।

कवि का शारदा स्तुति में भी, राष्ट्रीय चेतना की ओर ध्यान है-

''निष्कपट, निर्मल, निरामय, नम्र नित व्यवहार हो,
शुद्ध संचय, शुद्ध विनिमय, शुद्ध जन अधिकार हो,
प्रगतिरत भारत मही को, शांति का आधार दे।''

'मातृभूमि, पितृभूमि' रचना में भारत के दिव्य स्वरूप का दर्शन सहज ही किया जा सकता है-

''पग अनेक चाल एक, स्वर अनेक ताल एक,
लपट कोटि, ज्वाल एक, पुष्प कोटि, माल एक,
माँ तुम्हारी आरती की ज्योति पड़े मंद ना।''

मुख्यतः आदर्शोन्मुखी व्यंग्य में कवि का हृदय अधिक रमा है। नींव के पत्थर रचना में अनाम-धन्य शहीदों की वेदना का वर्णन इस प्रकार किया गया है-

''भवन के आधार हैं पर कुछ नहीं अधिकार इनको,
उम्र भर रहना पड़ेगा, भूमिगत लाचार इनको,
और इनके शीष पर बनती रहेंगी योजनाएँ।

बुद्धिमान और कर्मठ लोगों की उपेक्षा और प्रतिभाहीन लोगों की प्रतिष्ठा का तुलनात्मक चित्र देखिए-

''हंस चूमते हैं चरण काग के,
तम उगलते दीप तेज त्याग के,
जिंदगी सिसक रही है राह पर,
अंधकार है तले चिराग के,
विकट जन प्रवाह में, आह में, कराह में,
न्याय का कहीं पै कोई नाम ना।''

कवि की लेखनी ने नारी के अर्धनग्न स्वरूप को कुछ इस प्रकार चित्रित किया है-

''औरत के साथ आदमी का देखिए सलूक,
ब्यूटी के नाम चीरहरण कर रहे हैं लोग।''

इसी प्रकार अनेक क्षेत्रों में कवि के सटीक व्यंग्य सहज ही पाठक मन को आकर्षित कर देते हैं। कवि के दिल को भारत के राजनैतिक विखण्डन को देखकर बहुत गहरी चोट लगी है-

''अजी सब सेकते हैं रोटियाँ इसमें सियासत की,
जगत सिरमौर, निर्मल देश को तन्दूर कर डाला।
सलौना अपना भारत वर्ष था, बेनूर कर डाला।''

कवि के व्यक्तित्व, अनुभूति और चिन्तन की समरसता को देखकर लगता है कि कवि स्वयं भी श्रमिक है व उसका संघर्षों से गहरा लगाव है। उसकी दृष्टि में, जीवन का इस प्रकार विश्लेषण हुआ है-

''जीवन तब तक ही जीवन है, जब तक चंचलता है,
हो निराश, गतिहीन अगर यह, तब तो यह खलता है,
संघर्षों में तप कर जीवन, कुन्दन बन जाता है,
श्रम से, स्पन्दन से, गति से, इसका निर्मल नाता है।''

नींव के पत्थर संकलन में प्रकाशित गीतों और गज़लों की सरसता, कोमलता, एकरसता, संवेदनशीलता, संक्षिप्तता, सारगर्भिता, लयबद्धता तथा गेयता का दर्शन करके तथा गज़ल के प्रत्येक शेर की स्वायत्तता तथा लोकगीत की रमणीयता देखकर यह स्पष्ट अनुमान लगता है कि लेखक गज़ल, गीत और लोकगीत की बारीकियों से भलीभांति परिचित है।

यदि हम संक्षेप में 'नींव के पत्थर' संकलन की समीक्षा करें तो काव्यगत विशेषताओं का एक विशाल भण्डार समक्ष आता है इस विशाल भण्डार की अथाह सीमा को देखते हुए यह सहज की लिखा जा सकता है ''हर फूल यहाँ अति सुन्दर है, किसको तोडूं, किसको छोडूं।''

अतः इस पुस्तक का आनंद लेने के वास्तविक अधिकारी-श्रोता, पाठक और समीक्षक, स्वयं रसास्वादन करें।

इस महत्वाकांक्षी अमर कविताओं के संकलन का प्रकाशन करने पर मैं लेखक श्री पी.डी. निर्मल को बधाई देता हूँ और कामना करता हूँ कि यह संकलन लोकप्रियता की चरम सीमा को प्राप्त करें।

-डॉ. कुंवर बेचैन
2F51, नेहरू नगर,
गाज़ियाबाद (उ.प्र.)
09818379422

अनुक्रमणिका

क्र.	कविता	पृ.सं.
1.	वंदना	1
2.	मातृभूमि पितृभूमि.....	2
3.	हे अमर राष्ट्र	2
4.	कितना प्यारा	3
5.	कोटि प्रणाम (हरियाणा)	3
6.	नींव के पत्थर	4
7.	अपने वचन करी जिंदादिली	5
8.	मेल तुम्हारा वतन की जान है	7
9.	मांझी रे, नैया को थामना	8
10.	आज देश को नवीन प्राण चाहिए	9
11.	जवान को किसान को	9
12.	मिलके रहेंगे सदा	10
13.	उसका हिन्दुस्तान नहीं	11
14.	तब काम चलेगा	12
15.	मैं प्रलयंकर को	13
16.	बढ़ो देश के वीर सिपाही	15
17.	आज विजय की शुभ बेला में	15
18.	आओ नव निर्माण करें हम	16
19.	भारत वीरों ! आजादी के	18
20.	हे धरा के वीर निर्भय	19
21.	मेरे उपवन की कली कली	20
22.	ऋतुराज तुम्हारे स्वागत में	21
23.	जाने इंसान को आज क्या हो गया	22
24.	क्या इसको कहते हैं जीवन ?	23
25.	निठुर न जाने	24

26.	रास न आया	26
27.	तुन तुन तुनक तुनक	27
28.	चकनाचूर कर डाला	28
29.	कविता हुई तवायफ	29
30.	वो कह रहे विकास	30
31.	चल दिया चातक विवश हो	31
32.	बरखा गीत	32
33.	ड्रिम ड्रिम डिमक.....	32
34.	चश्मे बदल के	33
35.	पथ कोई पाषाण कोई	34
36.	सावधान देश के सिपाहियों	35
37.	कुछ तो बाकी को रहने दो	36
38.	आरी बसंत	38
39.	किस काम का तराना	39
40.	निष्क्रिय बैठा रहे सदा जो	40
41.	चेतन अविनाशी है...	40
42.	झूला तुझे झुलाऊँ	41
43.	मानुष जनम अमोल है	42
44.	जग में आके	43
45.	प्यार बिन जिन्दगी नहीं होती	44
46.	जिन्दगी को संवारो	45
47.	आदमी बेवफा बन गया है	46
48.	झूठा वंदन झूठा अर्चन	47
49.	जीवन को विक्षिप्त न कर दे	47
50.	सृजन पीछे पहले संहार	48
51	खिजाँ का छोड़ दो आंचल	49
52	पास रहे पास हैं	50

53.	आदर्शों की कठिन डगर पर	51
54.	जग को स्वर्ग बना जाना	52
55.	थोड़ा थोड़ा अगर बचाएं	53
56.	धीरे धीरे ले चल मांझी	54
57.	इंसानियत की ज्योति	55
58.	गीत मेरे जिंदगी से प्यार करना सीख ले	56
59.	चाहते हो यदि उजाला	57
60.	है दर्शन आसान समर्पण ही मुश्किल है	57
61.	सखि कर सोलह सिंगार	58
62.	स्वागतम!	59
63.	पंकज जहाँ खिलेगा	60
64.	तू मुरली मैं मधुमय गुंजन	60
65.	प्रेम नहीं कहलाता	62
66.	एक मिलन की रात	63
67.	छुप छुप के कौन	63
68.	पावन प्रेम वाटिका में तुम	64
69.	जो न समझे वही अनारी है	65
70.	भेज रही हूँ राखी के मिस	66
71.	उपेक्षिता	67
72.	विधवा	69
73.	यदि हम तुम नादान न होते	70
74.	बहिन की विदाई	71
75.	सदा एक जैसा निर्मल संसार नहीं होता	72
76.	कुछ न बिगड़ेगा तेरा	73

समर्पण

राष्ट्र-हित चिंतन करें जो मन, वचन और काम से,
जो जुड़े हैं सर्वहित से, न्याय से ईमान से,
देश के गौरव हैं वो चाहे उपेक्षित ओर अनाम,
'नींव के पत्थर' समर्पित हैं उन्हें सम्मान से।

-पी.डी. निर्मल

हरियाणा साहित्य अकादमी के
सौजन्य से प्रकाशित

लेखकीय

अपनी आयु के 77वें वर्ष में पदार्पण करते ही अपने साहित्यिक कार्यकाल (1951 से 2009) के विगत 58 वर्षों की उपलब्धियों की श्रृंखला पर दृष्टिपात किया। उसी मूल्यांकन के अन्तर्गत अतीत के कुछ दृश्य मस्तिष्क में उभर आए। साहित्य की यात्रा में मैंने आरंभ में ही छंदोबद्ध कविताओं व गीतों को अपना क्षेत्र बनाया। संगीत से लगाव होने के कारण मुझे 'काव्यसंगीत' के लेखन में सुविधा व सरलता की अनुभूति हुई। मेरा लक्ष्य छंदों में निबद्ध शब्द-सामर्थ्य' का प्रयोग रहा। 2009 तक लगभग 2000 रचनाएँ मेरे रचना धर्म में समाहित हो गई। इनमें लगभग 700 गीत, 710 दोहे, 400 मुक्तक चतुष्पदिये, सवैये आदि हैं। लगभग 200 धर्म क्षेत्र में लिखे गए भजन हैं।

1951 से 1958 तक मैं मंचीय रचनाएँ विशेष रूचि के साथ लिखने व पत्रिकाओं, कवि सम्मेलनों, रेडियो द्वारा उन्हें प्रसारित व प्रकाशित करता रहा। देश के तत्कालीन दिग्गज कवियों के साथ मैंने मंचों पर सशक्त कविता पाठ किया। स्व. श्री देवराज दिनेश, संतोष आनंद, बाल कवि वैरागी, काका हाथरसी, कुंवर बैचेन, अटल बिहारी बाजपेयी, निर्भय हाथरसी आदि सैंकड़ों कवियों के साथ मंचीय काव्य प्रसारण किया। आकाशवाणी चण्डीगढ़ व रोहतक से लगभग 20-22 वर्षों तक सक्रिय रूप से जुड़ा रहा। हरिगन्धा, पांचजन्य, राष्ट्रीय सहारा, रविन्द्र ज्योति, पंजाब केसरी, हिन्दू विश्व, सम्बंध सेतु आदि अनेक पत्र-पत्रिकाएं बड़े उत्साह से मेरी रचनाऐं प्रकाशित करती रही हैं। लगभग 70 रचनाएं आकाशवाणी से प्रसारित हुई और दो रचनाएं ''मातृभूमि, पितृभूमि, पुण्यभूमि वंदना'' व ''जय अनादि अमर देव'' आकाशवाणी रोहतक द्वारा खरीदी गई। मुक्तक, मंचीय रचनाओं के साथ-साथ 1985 से 2008 तक मैंने 6 महाकाव्यों का आलेखन किया। यदि कोई तनिक भी इस साहित्य का अवलोकन करे और साहित्य के इतिहास में इनका स्थान निर्धारित करें तो सहज ही में यह एक अद्वितीय उपलब्धि लगेगी। पारम्परिक

महाकाव्य की दृष्टि से हिन्दी साहित्य के इतिहास में मेरा साहित्य निश्चित रूप से सर्वप्रथम खड़ा है। मानस परिक्रमा महाकाव्य नई शैली का एकल पात्रीय महाकाव्य माना जायेगा। हरियाणा की मिट्टी से महिमा मण्डित यह महाकाव्य निश्चय ही एक हरियाणवी की ओर से हरियाणा संस्कृति को अनुपम उपहार है ऐसा मेरा मानना है। समाज व संचार इतिहास तथा मंच ने मुझे आशातीत प्रसिद्धि प्रदान की है। ''विधुरा महाकाव्य'' ने जहां एक तरफ मुझे डॉ. नगेन्द्र द्वारा सम्पादित हिन्दी साहित्य के इतिहास में एक प्रबन्ध काव्यकार के रूप में मान्यता दिलाई वहीं दूसरी तरफ हरियाणा रोडवेज में आजीवन मुफ्त यात्रा करने का अधिकार भी दिलाया। इन्हीं सफलताओं के सागर में निरन्तर तैरते हुए मेरे गीत अत्यन्त महिमा मण्डित, लोकप्रिय व अनुशंसित रहे। 30 अन्तर्राष्ट्रीय परिचय संहिताओं में मेरा नाम दर्ज हुआ। 700 गीतों का वृहत संकलन प्रकाशित करना, आज के छंद मुक्त, केंचुआ छंद व चुटकला साहित्य के युग में, एक बोरिंग प्रयास होगा किन्तु कुछ एक अमर गीतों का प्रकाशित करना अपना दायित्व समझता हूँ ताकि साहित्य क्षेत्र में कोई यह न समझे कि छंदों बद्ध गीत संरचना करने वाले लोग अब लगभग नगण्य रह गये हैं।

''साहित्य संगीत कला विहीनः साक्षात् पशुः पुच्छ विषाण हीनः'' का चिर-परिचित सिद्धांत अब तक मस्तिष्क से उतर नहीं रहा है।

युग धारा के विरुद्ध बह रहा हूं केवल इसी आशा व विश्वास के साथ कि हिन्दी साहित्य में गीत परम्परा को वरीयता देने वालों का अभी नितांत अभाव नहीं हुआ है।

शुभम्।

पुरुषोत्तम दास 'निर्मल'

लेखक

81, स.क.कॉ., नारनौल

दि. 15 अगस्त 2010

श्री सरस्वती वंदना

ऋद्धि दायिनी, सिद्धि दायिनी, बुद्धि दायिनी शारदे।
माँ उपासक के हृदय को, मधुमयी झंकार दे।

****

कंठ वीणा सा मधुर हो, स्वस्थ हो अनुभूतियाँ,
अति सरल शब्दावली हो, अति मनोहर कल्पना,
रसमयी वातावरण, अभिव्यक्ति के अनुसार दे!

****

हो विपुल अनुराग मंडित, सफल जीवन साधना,
मुक्त मन से हम करें कर्त्तव्य की आराधना,
चिर प्रकाशित, चिर प्रशंसित चिर सुखी संसार दे।

****

निष्कपट, निर्मल, निरामय, नम्र नित व्यवहार हो,
शुद्ध संचय, शुद्ध विनिमय, शुद्ध जन अधिकार हो,
प्रगतिरत भारत मही को शांति का आधार दे।

****

शिवस्तुति (ध्रुपद) 1985

जय अनादि अमरदेव, शंकर, त्रिपुरारी, शिव।
भालचन्द्र शीष गंग, कर त्रिशूल, कटि भुजंग
नीलकंठ, भृकुटि बंक, विकट वेषधारी।।
निर्मल हिम शैलखण्ड, राजत शिव गौरि संग।
मन में भर दो उमंग, भक्तन भयहारी।।

मातृभूमि, पितृभूमि

मातृभूमि, पितृभूमि, पुण्यभूमि वंदना,
वीर भूमि, देवधरा, जय जय दुखभंजना।

****

दिव्य हिम-किरीट भाल, शोभित उर सरित माल,
हरित वसन, नयन लाल, अतिकोमल अति कराल,
आदि शक्ति, अमर ज्योति, शरणागत रंजना।

****

पग अनेक चाल एक, स्वर अनेक ताल एक,
लपट कोटि, ज्वाल एक, पुष्प कोटि, माल एक।
माँ तुम्हारी आरती की ज्योति पड़े मंद ना।

****

हे अमर राष्ट्र शत् शत् प्रणाम

हे अमर राष्ट्र शत् शत् प्रणाम
हे मातृभूमि! हे पितृभूमि! हे पुण्यभूमि! हे मुक्ति धाम!

****

तुम महासृष्ट्रि का प्रथम चरण, तुम महानाश के हो विराम,
तुम जग पालक के वरद हस्त, तुम सत् रज तम के क्रम विधान।
जग के सद्ग्रंथ पुकार रहे हैं, विश्व-वंद्य भारत महान।

****

तेरा विकास युग का विकास, तेरा क्रंदन युग का क्रंदन,
तेरा विनाश युग का विनाश, तेरा जीवन युग का जीवन।
वसुधा के निर्मल शौर्य उठो, नभ में गूंजे नव शक्तिगान।

****

4/40-4 देश की सौन्दर्यानुभूति रचना : 24.01.67

कितना प्यारा अपना हिन्दुस्तान है.....

कितना प्यारा अपना हिन्दुस्तान है
हमें गर्व है हम धरती के राज मुकुट की शान है।

****

उत्तर में गिरिराज हमारे गौरव का रखवाला है,
दक्षिण में छल-छल लहराता, वह सागर मतवाला है।
अपनी गरिमा के रखवाले, अपने चारों धाम है।

****

इसकी शोभा इसकी गरिमा, तीन लोक से न्यारी है,
यह तो कुदरत के आंगन की, हरी भरी फुलवारी है।
वैभव का भण्डार संजोए, इसकी धरा महान है।

****

उठो और जग को दिखला दो, हम इसके रखवाले हैं,
हँसते हँसते मातृभूमि पर शीष चढ़ाने वाले हैं।
लाल जवाहर, हीरे मोती, सैनिक और किसान हैं।

****

अपने श्रम से, अपना वैभव, अपनी शक्ति बढ़ाऐंगे,
क्रांति ज्वाल में जलते युग पर, शांति सुधा बरसाऐंगे।
जग मलीन क्यों रहे कि जब जीवित निर्मल इंसान हैं।

****

5/360-5 प्रदेश वंदना रचना : 23.9.82 (शहीद दिवस)

कोटि प्रणाम (हरियाणा)

वीर प्रसूता हरियाणा के, नर-वीरों को कोटि प्रणाम,
स्वर्ण अक्षरों में अंकित है, जन मानस पर जिनके नाम।

****

इस धरती पर कभी चला था, यान कृष्ण भगवान का,
यहीं ज्ञान गीता का गूँजा, पतन हुआ अभिमान का,
कुरूक्षेत्र बन गया तभी से, इस धरती का तीर्थ महान।

****

सतनामी वीरों का जौहर, खुद में एक कमाल है,
देखो तो इस युद्ध भूमि की, अब तक माँटी लाल है,
दीपक से टकराकर हारा, यहाँ सदा भीषण तूफान।

****

सतावन में वीरों ने, खाई सीने पर गोलियाँ,
हँस हँस कर वीरों ने खेली, यहाँ खून की होलियाँ,
तुलाराम से नर सिहों के, गूँज रहे अब तक जयगान।

****

यह हेमू की जन्मभूमि है, धरती हर्ष महान की,
यह ऋषियों की तपोभूमि है, विजय स्थली चौहान की,
इस धरती का कण-कण निर्मल, चंदन और अबीर समान।

****

4/30-6 अनाम धन्य देशभक्तों की मनोव्यथा रचना : 29.3.77

नींव के पत्थर

नींव के पत्थर भवन का बोझ कंधों पर उठाए,
पिस रहे कब से निरंतर वेदना उर में छुपाए।।

****

संग के साथी हजारों गगन चुम्बी हो रहे हैं,
मखमली परिधान ओढ़े नींद सुख की सो रहे हैं।
ये अधिक बोझिल हुए ज्यों ज्यों उठी अट्टालिकाऐं।।

****

बदलियाँ तन धो रही है, बिजलियाँ उनको सजाए,
मधुर गीतों की लहक पर पटु पवन पलना झुलाएं।
किंतु धरती में धंसे पाषाण दुख किसको सुनाएँ।।

****

यदि कहीं एक बूँद जल भी रिस पड़े इनके गले में,
छिद्र भर देते हैं मालिक, कौन है इनके भले में।
चिर अधूरी प्यास लेकर, प्यास औरों की बुझाएँ।।

****

है हजारों रंग जग के, मीत पर इनका अंधेरा,
बाहरी दुनियाँ बड़ी है, नींव का एक तंग घेरा।
ढो रहे हैं भार परहित, झेलकर लाखों व्यथाएँ।।

****

भवन के आधार है पर कुछ नहीं अधिकार इनको,
उम्र भर रहना पड़ेगा, भूमिगत लाचार इनको।
और इनके शीष पर बनती रहेंगी योजनाएँ।।

****

4/45-7 राष्ट्रभक्ति पर केन्द्रित कव्वाली रचना : 18.2.70

अपने वतन की जिंदादिली

अपने वतन की जिंदादिली, बेमिसाल है,
हर फूल बेमिसाल, कली बेमिसाल है।

****

कुदरत ने हर कदम पे, नया रंग जमाया,
नदियों, वनों, पहाड़ों से, दामन को सजाया।
शेरः- ऐसे पर्वत हैं कहाँ, ऐसे टीले हैं कहाँ,
ऐसे जंगल हैं कहाँ, ऐसी झीले हैं कहाँ।
ऐसे गुलशन हैं कहाँ, ऐसी गलिया हैं कहाँ।
ऐसे सागर हैं कहाँ, ऐसे दरिया हैं कहाँ।
ऐसे मैदां हैं कहाँ, ये सुबहो शाम कहाँ।
मौसमी रंग लिये, साजो सामान कहाँ।

****

नीलम में सुबहोशाम ढली बेमिसाल है,
हर फूल बेमिसाल कली बेमिसाल है।

****

इंसानियत का पाठ यहीं से शुरू हुआ,
इससे बड़ा न कोई मुहब्बत का सिलसिला।।

****

शेरः- वेदों गीता में यहीं, उसके इल्हाम हुए,
उसका पैगाम लिये, रामघनश्याम हुए,
बुद्ध से धीर हुए, वीर महावीर हुए,
देव नानक से यहीं, पंथ के पीर हुए,
प्रीत ही शान यहाँ, प्रीत ईमान यहाँ।
प्रीत इंसान यहाँ, प्रीत भगवान यहाँ,
तहजीब मुहब्बत में पली बेमिसाल है।

****

यह प्यार का बादल है, हबीबों के वास्ते,
यह जहरे हलाहल है, रकीबों के वास्ते,
इसका दुलार इसकी बली बेमिसाल है।

****

हम शीष कटाते हैं, झुकाते नहीं कभी,
हम प्रीत निभाते हैं, भुलाते नहीं कभी,
निर्मल है जिगर ज़ात भली बेमिसाल है।।

****

5/387-8 प्रबोधन गीत रचना नारनौल : 15.8.84

मेल तुम्हारा वतन की जान है

अपने वतन की ज़मीं महान है,
मोतियों जड़ा ये आसमान है,
देश के निवासियों भेदभाव छोड़ दो,
मेल तुम्हारा वतन की जान है।

****

रत्न जड़े साँझ और प्रभात हैं,
चांदी सोने के दिवस रात हैं,
ऋतुओं के रंग अपने साथ हैं,
अपना सौभाग्य अपने हाथ हैं,
धन उगल रही जमीं, धान की कमी नहीं,
देव धरा स्वर्ग के समान है।

****

एक दिन हमारे सर पे ताज था,
जल धरा गगन पे अपना राज था,
जब न कहीं प्यार का रिवाज था,
तब भी यहाँ शुद्ध राम राज्य था,
अब कहाँ गए वो दिन, जग दुखी है प्यार बिन,
जिंदगी हताश, बेजुबान है।

****

लूट पाट, वैर, घृणा त्याग दो,
खुद जियो, सभी को अपना भाग दो,
हर जुबां को प्यार भरा राग दो,
मातृभूमि को अचल सुहाग दो,

देश के लिये जियो,
देश के लिये मरो,
देश एक है तो अपनी शान है।

****

5/305-9 उद्‌बोधन रचना : 27.8.79

नैया को थामना

तरनी मझधार है, डगमग पतवार है, भीषण तूफान से है सामना,
माँझी रे नैया को थामना।

****

कभी इधर कभी उधर झूमती, धाराएँ अम्बर को चूमती,
पुरवा के संग संग बावरी, बहकी बदरिया सी घूमती,
सागर में ज्वार है, जोश है खुमार है, हो न जाए चूर मनोकामना।
माँझी रे नैया को थामना।

****

तट का आधार अभी दूर है, आसमान धुँधला बेनूर है,
तनिक भी प्रकाश नहीं राह में, मन निराश, बोझिल मजबूर है,
धूमिल संसार है, गहन अंधकार है, संभावित सुंदर परिणाम ना,
माँझी रे नैया को थामना।

****

ओ साथी, साहस से काम ले, हिम्मत का छोर बढ़ के थाम ले,
जिसने तुझे डाल दिया त्रास में, उस लहर-लहर से इन्तकाम ले,
बल का संसार है, जीवन ही सार है, चलना है करना विश्राम ना।
माँझी रे नैया को थामना।

****

5/292-10 देशभक्ति गीत रचना : 15.8.78

आज देश को नवीन प्राण चाहिए

आज देश को नवीन प्राण चाहिए,
हर कदम चरित्र का प्रमाण चाहिए।

****

आई है स्वतंत्रता बड़े प्रयास से,
हम निकल के आए हैं प्रचंड त्रास से,
अधखिली स्वतंत्रता को त्राण चाहिए।

****

तोड़-फोड़ लूट पाट आज किस लिए,
घृणित, वर्ग-जन्य नित प्रमाद किस लिए?
एक दिल हमारा, एक जान चाहिए।

****

अज्ञता, दरिद्रता न शेष हो यहाँ,
प्रेम सच्चरित्रता, विशेष हो यहाँ,
साहसी किसान नौजवान चाहिए।

****

व्यक्ति के लिए न राष्ट्र को भुलाइए,
कर्म निष्ठ, ध्येय निष्ठ जन बनाइए,
व्यक्ति व्यक्ति देश का महान चाहिए।

****

5/238-11 श्रद्धाँजलि रचना : 16.8.72

जवान को किसान को

मरे जो देश के लिए, प्रणाम उस जवान को,
जिए जो देश के लिए प्रणाम उस किसान को।।

****

डिगा नहीं सके जिसे ज़हर उगलती गोलियाँ,
डरा नहीं सके जिसे, कहर मचाती टोलियाँ,
वतन पे हँस के वार दे, जवान अपनी जान को।।

****

उगल रही है स्वर्णधरा, जिसके बल प्रताप से,
सनाथ पुण्य भूमि है, किसान के कलाप से,
भुला सकेगा कौन भला, मौन रक्तदान को।।

****

जवान की कटार मातृ भू की आन बान है,
किसान का अनाज, अपने भाग्य का प्रमाण है,
प्रणाम वीर भूमि के, जवान को किसान को।।

****

4/48-12 राष्ट्रीय एकता केन्द्रित गीत रचना : 1.12.85

मिलके रहेंगे सदा

मिलके रहेंगे सदा, ये वचन कर लें
लाख बाधाएँ आएँ, न दिल में हम घबराएँ।
मिलके रहेंगे सदा

****

हँसते मुस्काते चलें, सबको हर्षाते चलें,
दीन दुखियों पै सदा, प्यार बरसाते चलें,
न मेहनत से कतराएँ, धरा को स्वर्ग बनाएँ,
दुनिया की बदलें हवा, ये वचन कर लें।

****

कोई तकरार ना हो, कोई दीवार ना हो,
हिंसा, उन्माद भरा, अपना संसार ना हो,
हमारे दिल में तुम हो, तुम्हारे दिल में हम हों,
नफरत को कर दें विदा, ये वचन कर लें।

****

अपना आधार हो तुम, अपना संसार हो तुम,
जिन्दगी गर है चमन, हँसती बहार हो तुम,
जो निर्मल तन मन होगा, सुखी घर आँगन होगा
उसकी रहेगी दया, ये वचन कर लें।

****

4/37-13 देश के गद्दारों पर कटाक्ष रचना : 20.9.72

उसका हिन्दुस्तान नहीं.....।

जो जननी का दर्द न जाने वह सच्ची संतान नहीं,
जिसे देश से प्यार नहीं है उसका हिन्दुस्तान नहीं।

****

गिरि, कानन, सागर, सरिताएँ, इस धरती की शान है,
कुदरत का अनमोल खजाना अपना हिन्दुस्तान है।
इससे सुंदर स्वर्ग खोजना, धरती पर आसान नहीं।
जिसे देश से प्यार नहीं.....।

****

इस धरती का पत्थर-पत्थर, हीरा मोती लाल है,
गौतम गांधी, लाल जवाहर, भारत का हर बाल है,
उसका मन निष्प्राण कि जिसको भारत पर अभिमान नहीं।
जिसे देश से प्यार नहीं.....।

****

रंग बिरंगे लोगों का यह रंग बिरंगा देश है,
पंथ हजारों हो सकते हैं किंतु लक्ष्य तो एक है,
इसे विखण्डित करने वाला, पत्थर है इंसान नहीं।
जिसे देश से प्यार नहीं.....।

****

अपने तन मन जीवन पर माँ के अनगिन एहसान हैं,
धन्य वही है, जिन्हें प्राण से प्यारा हिन्दुस्तान है,
वह वाणी निस्सार कि जिसमें जननी का जयगान नहीं।
जिसे देश से प्यार नहीं.....।

****

2/119-14 राष्ट्र रक्षा हेतु प्रोत्साहन रचना : 16.5.65

तब काम चलेगा

एक एक चिंगारी से क्या होगा साथी,
ज्वालामुखी महान बनो तब काम चलेगा,
मधुर भाषणों का परिणाम बहुत देखा है,
गर्म रक्त से स्नान करो तब काम चलेगा।

****

युग-युग से इतिहास तुम्हें समझाता आया,
जब जब दुश्मन को छोड़ा तब तब पछताए,
धर्म भीरूता ने ही कायर हमें बनाया,
धैर्य और संतोष हमें नित खाते आए,
साँपों को बहुतेरा दूध पिलाया हमने,
अब तो उनके प्राण हरो तब काम चलेगा।

****

गीता ने हमको अमरत्व प्रदान किया है,
रामायण ने हमें दिया मर्यादित जीवन,
सुख से जीना और शक्ति से रहना सीखो,
तभी अहिंसा और सत्य का होगा अर्चन।
आतताइयों से कितने दिन प्रीत निभाई,
प्रबल शक्ति आह्वान करो तब काम चलेगा।

****

विजय प्राप्त हो जिससे नीति वही होती है,
बिना सफलता नीति भूल ही कहलाएगी।
साम, दाम से, दंड भेद से जैसे भी हो,
देश बचालो, जीत तुम्हें खुद मिल जाएगी।
राजनीति के खेल बहुत खेले हैं तुमने,
रक्षा का सामान करो तब काम चलेगा।

****

उठो लिये उन्माद और उल्लास हृदय में,
उधर खड़ी मानवता ले जयमाला कर में,
पशुता का संहार करो तब शान तुम्हारी,
सुन जय घोष तुम्हारा, दीप जलें घर घर में,
मानवता के चीत्कार से हृदय फट रहा
मधुमय, निर्मल गान भरो तब काम चलेगा।

****

2/86-15 देश भक्ति गीत रचना : 15.2.64

मैं प्रलयंकर को तांडव नाद सुनाता हूँ

तुम गीतों से प्रिय का सत्कार किये जाओ,
मैं नीले अंबर में रणभेरि बजाता हूँ।
तुम चाँद सितारों से श्रृंगार किये जाओ,
मैं प्रलयंकर को तांडव नाद सुनाता हूं।

****

झंझा में तुमको लहरें गिनने की सूझी,
तुम उथल-पुथल को लहराता दामन समझे,
तुमने प्रचंड ज्वाला में शीतलता देखी,
धरती कांपी तुम प्रेयसि का नर्तन समझे,

तुम सरगम से प्रिय की मनुहार किए जाओ
मैं रणचंडी का सोया तेज जगाता हूँ।

****

हिमगिरि के आँसू नदियाँ बनकर बहते हैं,
सागर भी तट से लिपट लिपट कर रोता है,
ऐसे में भी क्यों तुमको नींद सताती है,
क्यों बोझिल पलकों से घायल मन सोता है,
तुम अधरों से प्रिय का सौंदर्य पिए जाओ,
मैं घोर गर्जना से नभ को थर्राता हूँ।

****

जब तक माँ का सम्मान दाँव पर लगा हुआ,
तब तक रण के प्रलयंकर गीत सुनाऊंगा,
जब तक कण-कण में भीषण ज्वाल न धधकेगी,
तब तक व्याकुल दीपक सा जलता जाऊंगा,
तुम प्रेयसि के हाथों से जहर पिये जाओ,
मैं रक्त बिन्दु से माँ का भाल सजाता हूँ।

****

धिक्कार उसे जो घर का त्रास मिटा न सके,
प्याला पी पी कर उर की प्यास बुझाता है,
जिसकी माँ टुकड़े-टुकड़े को मोहताज रहे,
खुद सोने की थाली में भोजन खाता है,
तुम स्वत्व भुलाकर मद से प्यार किये जाओ
मैं निर्मल भू पर अंबर आज झुकाता हूँ।

****

2/77-16 देश भक्तों को प्रोत्साहन रचना : 15.6.63

बढ़ो देश के वीर सिपाही

बढ़ो देश के वीर सिपाही, जाग उठा है हिन्दुस्तान,
आज तुम्हारे हाथों में है, देना जग को जीवन दान,

****

आज सभी गतिरोध भुलाकर, भारत राष्ट्र पुरुष बन जागा,
जनता ने नव शक्ति सँजोई, जड़ता का अंधियारा भागा,
आज तुम्हारे चरण चूमते, कोटि कोटि तन मन धन प्राण।

****

चंचल बालक आज तुम्हें, आगे बढ़ने का गीत सुनाएँ,
तुम्हें शक्ति से पूरित करने, कितने जन सर्वस्व लुटाएँ,
देखो बलि की होड़ लगी है, जाय न यह खाली बलिदान।

****

कभी न भूलो इस धरती ने, तुमको जीवन दान दिया है,
सदियों से शोषित जननी ने, तुम्हें स्वर्ण परिधान दिया है,
मरकर भी तुम अमर रहोगे, गूँजेगा नभ में जयगान।

****

बढ़े चलो हिमगिरि से आगे, आज क्षितिज के पार चलेंगे,
बर्बरता का सर्वनाश कर, राम-राज्य विस्तार करेंगे,
तुम्हें कसम निर्मल प्राणों की, रचना होगा स्वर्ण वितान।

****

1/27-18 देशभक्ति गीत रचना : 19.9.52

आज विजय की शुभ बेला में.....

आज विजय की शुभ बेला में, अंग-अंग पुलकित होता है।
जंगल में मंगल छाया है, पत्ता-पत्ता मुस्काया है,
जीवन को आनंद मिला है, मन पंकज बन आज खिला है,

फिर भी भारत चिर प्रसुप्त, निद्रा में निद्रित क्यों सोता है।
आज विजय .....।।

****

उधर देख तब विजय चित्र आलोकित लोक किए देता है,
नत मस्तक संसार उधर को, इधर करवटें तू लेता है।।
निंदिया से कर प्रेम न प्यारे, दिनकर भी निज मुख धोता है।
आज विजय .....।।

****

अपने राम राज्य की महिमा, प्राची के दिनकर से पूछो,
धवल, गगन चुंबन करने को उद्यत उस हिमगिरि से पूछो,
पूछो उस अखंड भारत से जिसके पग सागर धोता है।
आज विजय .....।।

****

रामचंद्र का विजय दिवस यह, तुमको निज गौरव दिखलाए,
देश, धर्म, कुल, लोक सभ्यता की रक्षा करना सिखलाए,
निर्मल बल की पूजा के, बिन नहीं कहीं कुछ भी होता है
आज विजय .....।।

****

1/23-19 देशभक्तिगीत रचना : 15.8.85

आओ नव निर्माण करें हम

आओ नव निर्माण करें हम,
दूर क्षितिज पर दीख रही है, चिर प्रकाश की नूतन रेखा
अंधकार के सागर में भी हमने प्रखर उजाला देखा
झिलमिल झिलमिल सुख के तारे, मुस्काते हैं नील गगन में,
सागर के उस पार देखिए नव बसंत छाई उपवन में
अन्तस् की वीणा के स्वर में, प्रबल शक्ति का गान भरें हम
आओ नव निर्माण करें हम....

****

कठिन मार्ग पर चलना होगा, पग पग पर काँटे बिखरे हैं,
अंधकार है, बीहड़ बन है, काले काले मेघ घिरे हैं,
सन् सन् सन् सन् पवन मार्ग में, छीन न ले अपने साहस को,
सागर की छप् छप् लहरों पर, मिली अमावस इस पावस को,
हे प्रकाश की धूमिल रेखा, तेरा ही आह्वान करें हम,
आओ नव निर्माण करें हम....

****

टूटी फूटी नौका अपनी, भूखे नंगे साथी सारे,
एक एक रोटी की खातिर, जो फिरते हैं मारे मारे,
झूम रहे माँझी निंदिया में, सागर में तूफान उठा है,
अधिक तीव्र पापी पुरवैया, कितना हाहाकार मचा है
आओ साथी मोह छोड़ कर, निष्प्राणों में प्राण भरें हम,
आओ नव निर्माण करें हम....

****

एक एक आहत को लाओ, नौका की पतवार बना दे,
नैया खेवन हार बना दें, सागर का उपहार बना दें,
सागर की चंचल लहरों को, बाँध सकेंगे हम पलभर में,
जब तक अन्त तिमिर का होगा, होंगे हम प्रकाश के घर में,
पहिले हाहाकार मिटावें, आगे तभी प्रयाण करें हम।
आओ नव निर्माण करें हम....
सागर के उस पार पहुंचकर, होगा नव-निर्माण हमारा,
यह उज्ज्वल वैभव का घर है, यहाँ नहीं है त्राण हमारा,
हे सागर की निर्मल धारा, रख ले इतना ध्यान हमारा,
जब तक तेरी गोदी में है, रक्षित रखना मान हमारा,
जगती के सूखे प्रांगण को, हरा-भरा उद्यान करें हम।
आओ नव निर्माण करें हम....

****

भारत वीरों ! आजादी के पौधे को मत मुरझाने दो

आजादी की कीमत क्या है यह पूछो उन परवानों से,
आजादी पथ कितना लंबा, यह पूछो चलने वालों से,
युग युग बीते कब चैन लिया, सत्पथ दिखलाने वालों ने,
खो बैठे जीवन का बसंत, आजादी ली मतवालों ने,
यह आजादी आसान नही, आसानी से मत जाने दो,
भारत वीरों! आजादी के पौधे को मत मुरझाने दो।

****

इतना भीषणतर उत्पीड़न भारत में आजादी लाई
बेकारी मर्यादा मर्दन, भारत में आजादी लाई,
माना आशंकित दुनियां है, भारत में क्या तूफान मचा,
मंहगाई बढ़ती जाती है, दुर्बलतर है बच्चा बच्चा,
फिर भी आजादी शाप नहीं, इसको तुम पांव जमाने दो
भारत वीरों ! आजादी के पौधे को मत मुरझाने दो।

****

दुनियाँ में हाहाकार मचा, दुर्बल देशों को खाने का
वे शक्तिमान दो राष्ट्र आज कर रहे यत्न छा जाने का,
अपनी सीमाएँ डगमग हैं, अपना वैभव है विचलित सा,
अपने साथी हैं स्वार्थ-सिक्त, अपना भविष्य है धूमिल सा,
आजादी की चिंगारी को तुम हर दिल में जग जाने दो,
भारत वीरों ! आजादी के पौधे को मत मुरझाने दो।

****

जीवन का मूल्य इसी में है, जब इसमें व्यापक संघर्षण,
आजादी का छोटा पौधा कुछ मांग रहा है मधु सिंचन,
यह मधु कैसा जिसमें व्यापक, मधुमक्खी का बलिदान नहीं
वह आजादी क्या जिसके हित देते हम जीवन प्राण नहीं

मरकर भी यदि जीवन पाए, आजादी तो सरसाने दो।
भारत वीरों ! आजादी के पौधे को मत मुरझाने दो।

****

है ज्ञात हमें निश्चित है यह भारत में खुशहाली होगी,
आजादी यदि भारत में है, तो एक दिन हरियाली होगी,
सूखे पत्ते, कलियाँ टूटें, मुरझाने दो, गिर जाने दो,
भारत की वर्तमान, झंझा, कल निर्मल दीवाली होगी
सूखे पत्तों का बल पाकर, कल फूल खिले, खिल जाने दो।
भारत वीरों ! आजादी के पौधे को मत मुरझाने दो।

****

1/4-21 राष्ट्रभक्ति गीत रचना : 11.8.58

हे धरा के वीर निर्भय..... !

हे धरा के वीर निर्भय!
तू बढ़ा निज पग निरंतर, है विजय श्रम-साध्य निश्चय!
साधना तेरे हृदय में, दीप बनकर जगमगाती
यह अलौकिक ज्योति निशदिन, मुखर जड़ता को भगाती,
तू जगा दे दीप जग के, तू खिला दे नवल किसलय।
हे धरा के वीर निर्भय.....

****

हे सखा ! तव दिव्य जीवन, वेदना की विकल सरगम,
कंटकों की ताल मग में, अड़चनों का नृत्य छम् छम्।
आज साहस के स्वरों में, छेड़ आशा की मधुर लय!
हे धरा के वीर निर्भय.....

****

आहतों के संग चला तू, दुःख का सागर सुखाने
तारिकाओं के सहारे, गगन धरती पर झुकाने,
दूर हिमगिरि के शिखर पर, बाट तेरी जोहती जय।
हे धरा के वीर निर्भय.....

****

तू चला दुनियां चलेगी, है सफल आह्वान तेरा,
स्पष्ट है नभ में धरा पर, सूर्य सम सम्मान तेरा,
आज तेरे हाथ में है, विश्व की जय या पराजय।
हे धरा के वीर निर्भय.....

****

आज जननी की निगाहें, आँसुओं से पथ संवारे,
शांति की निर्मल पताका, लहर कर करती इशारे,
प्राण तेरे त्राण युग का, मृत्यु तेरी काल को भय।
हे धरा के वीर निर्भय.....

****

2/128-22 देशहित शुभकामनाएँ रचना : 16.8.85

मेरे उपवन की कली कली

मेरे उपवन की कली कली, भारत माँ का श्रृंगार बने।
उन्नत मस्तक का भाग्य बिंदु, नूपुर की मृदु झंकार बने।
मेरे ..... ।।

****

मन कोमल कलियों की सुगंध, जीवन का हल्का करे भार,
उनकी सुन्दर छवि पंक्ति बद्ध, जन-जीवन में लाए बहार।
जयमाल बने माँ के उर की, कोमल अन्तर का प्यार बने।
मेरे ..... ।।

****

मुस्कान भरा उज्ज्वल भविष्य, इनका आह्वान करे प्रतिपल,
उन्माद भरा यह वर्तमान, पहिचान जाय इनका संबल,
इनका मुरझाना ही पतझर, इनका विस्तार बहार बनें,
मेरे ..... ।।

****

घर की बंसत पथ की बहार, यौवन का चंचल मधुर प्यार,
जन-जन के अन्तस् की पुकार, युग के सितार का तार-तार।
सद्शक्ति-सुधा की सरस धार, वैभव का पारावार बने।
मेरे ..... ।।

****

वो फूल खिले कल, कलियों से, जो उपवन का सम्मान बने,
जिनके सौरभ से अग जग में, शत् कोटि सुघड़ उद्यान बनें,
जगती के प्रांगण की शोभा, नव युग के नव आधार बनें।
मेरे ..... ।।

****

माँ की पीड़ाओं की औषधि, निर्मल-विकास का मापदण्ड
सुख शांति और सहयोग भरे, युग का हो इनसे शुभारंभ,
उपहार बने मानवता का, पशुता पर तीव्र प्रहार बनें।
मेरे ..... ।।

****

2/115-24 प्रकृति चित्रण केन्द्रित गीत रचना : 7.3.65

ऋतुराज तुम्हारे स्वागत में

ऋतुराज तुम्हारे स्वागत में,
सुरभित बयार नांचे छम छम
कुसुमावलि झूमे लहर लहर,
भँवरे गुंजार करे गुन गुन।
ऋतुराज तुम्हारे ..... ।

****

सब ओर फाग, सब ओर राग,
बिखरा पग पग मधुमय पराग,
नयनों के पथ से आ जाओ,
छेड़ो उर में मीठी सरगम।
ऋतुराज तुम्हारे ..... ।

****

यह मधुर मिलन की बेला है,
धरती अंबर का मेला है,
सारी चिंताओं को विसार,
किलकार उठा प्यासा यौवन।
ऋतुराज तुम्हारे ..... ।

****

जागा अनुराग भरा जीवन,
सौंदर्य प्रेम का अवगुंठन,
मधुऋतु में भी जो मौन रहे,
यह क्या निर्मल मन की धड़कन।
ऋतुराज तुम्हारे ..... ।

****

6/106-25 व्यंग्य गीत रचना (नारनौल) 22.5.87

जाने इंसान को आज क्या हो गया

जाने इंसान को आज क्या हो गया
ज्ञान विज्ञान में जगमगाने के बाद।
जल रहा वो किसी की खुशी देखकर,
हँस रहा वो किसी को जलाने के बाद।।

****

चाँद, सूरज, सितारे, पवन, जल, ज़मी,
जी रहे हैं सभी प्यार की जिंदगी,
आदमी बेरहम बेवफा हो गया,
प्यार देता नहीं, प्यार पाने के बाद।

****

फूल में आज भी रूप है गंध है,
प्यार भँवरे का भी फूल के संग है।
चहचहाते हैं खग आज भी प्यार से,
डाल पर, हर सुबह, जाग जाने के बाद।

****

दिल मिला था उसे प्यार करके जिये,
जी रहा वो मगर दिल में नफरत लिये,
बेझिझक खून करता है निर्दोष का,
कोई झूठा बहाना बनाने के बाद।

****

सुख धरा का चुरा चैन सागर का ले,
चाहता अब सितारों की छवि छीन लें,
दिल जो निर्मल नहीं तो कहीं सुख नहीं,
सुख मिलेगा उसे दिल मिलाने के बाद।

****

1/18-26 यथार्थ एवम् आदर्श केन्द्रित रचना रचना : 20.6.53

क्या इसको कहते हैं जीवन.....।

नेत्र कांति से हीन हुए है, मुख से चिंता टपक रही है,
पेट पीठ मिल एक दीखते, एक-एक नस दीख रही है,

जीर्ण हुए है वस्त्र और फिर दुर्लभ है रोटी के दर्शन,
क्या इसको कहते हैं जीवन.....

****

इधर एक टूटी सी प्याली पड़ी हुई हैं औंधी भू पर,
सम्मुख झोली कल्पित युग की, कुछ पैसे है जिसके ऊपर
पीछे पत्थर का आश्रय ले पड़ा एक निर्बल मानव तन।
क्या इसको कहते हैं जीवन.....

****

सुंदर मेज और कुर्सी पर सजे हुए पकवान मिठाई,
एक ओर वे तृषित निगाहें एक ओर इतनी निठुराई,
माना विधि की ही विडम्बना, दीख रही है पल-पल छिन-छिन।
क्या इसको कहते हैं जीवन.....

****

निर्मल भाग्य बनाया विधि ने किन्तु हृदय भी तुम्हें दिया है,
बनो किसी के भाग्य विधाता विधि ने तुम्हें समर्थ दिया है,
बलि दो निज असीम वैभव की, तड़प रहा भारत का यौवन।
हाँ, इसको कहते हैं जीवन.....

****

4/31-28 परिवेश पर व्यंग्य रचना : 12.10.80

निठुर न जाने

निठुर ! न जाने ले आए तुम,
हमें कौन से गाँव में,
यहाँ नहीं है ताप धूप में,
शीत नहीं है छाँव में।।

****

कलिकाएँ, निर्गंध, मौन है भ्रमर, शून्य अनुराग है,
नीरव तरूवर, रंक सरोवर, शोकाकुल ऋतुराज है।
मन उन्मन गतिहीन तरंगे नहीं चपलता पाओं में।।

****

डाल-डाल पर पंछी बैठे, किंतु चहकना बंद है,
तिनका-तिनका नीड़ बन गया अन्तस्थल निस्पंद है।
दीख रहा अस्तित्व अनिश्चित, बाज लगे हैं दावों में।।

****

रह-रहकर तूफान उठ रहे, नीड़ बिखरते जा रहे,
शक्तिहीन मजबूर विहंगम, आपस में टकरा रहे।
निर्बल पंख क्षुधातुर तन है, लेकिन कटुता भावों में।।

****

तुम कहते थे गाँव हमारा, इस धरती का स्वर्ग है,
मनमोहक घर आँगन इसके सुखी यहां हर वर्ग है।
जीवन में उल्लास भरा है, हृदय भरे हैं चावों में।।

****

क्या जीवन ! क्या उपवन तेरा! कदम-कदम पर त्रास है,
भूख उदर, आँखों में आँसू, अधरों पर चिर प्यास है।
मिलकर दुखी यहाँ जन-जीवन रस लेता अलगाव में।।

****

संभव है पहिले होगा अति सुंदर तेरा गाँव रे,
पर अतीत पर गर्व व्यर्थ है, गत का विगत प्रभाव रे।
तट पर वही लगा कहती है, छिद्र न हो जिस नाव में।

****

जीवट से जीवन की शोभा, मन की शोभा प्यार से,
चंचलता से तन की शोभा, वीणा की झंकार से।
सुलभ सदा सुख शांति सफलता प्रेम-पुनीत लगाव में।।

****

कह दो बहके जन जीवन से, आंगन को उल्लास दे,
तन को मेहनत प्रीत नयन को, अधरों को मृदुहास दे।
रस परिपाक तभी संभव, जब उठे तरंगे भावों में।।

****

फूल फूल उपवन बन जाए, पग पग पर मधुमास हो,
कण-कण में निर्मल उजियारा, मन में प्रिय की प्यास हो।
तन में तेज हृदय में स्पंदन, बल हो हर प्रस्ताव में।।

****

04/23-29 पारिवेशिक विसंगति पर केन्द्रित रचना : 5.7.77

रास न आया.....

या जग को हम समझ न पाए,
या जग हम को रास न आया,
कदम कदम पर अनुमानों से,
सत्य तभी तो उल्टा पाया।।

****

देव समझ कर जिसको पूजा
अरमानों की भेंट चढ़ाई,
किन्तु उसी पाषाण हृदय ने,
पग पग पर हमको ठुकराया।।

****

हमने सबको मीत समझकर,
अपने मन की व्यथा सुनाई।
रो रो कर सबने दुख पूछा,
हँस-हँस कर जग को बतलाया।।

****

जीवन भर खुशियों के पीछे,
संघर्षों का बोझ उठाया,
शूल भरे उपवन में फिर भी,
मुस्काता मधुमास न आया।।

****

4/36-29-30 राष्ट्रीय परिवेश पर
व्यंग्य गीत (अन्योक्ति) रचना : 16.11.83

तुन तुन तुनक तुनक

तुन तुन तुनक तुनक तुन बोले, बोले जोगी का इकतारा।
सब के मन की व्यथा टटोले, बोले जोगी का इकतारा।।

****

मुल्ला, संत, पादरी मांगे, रोज खून का प्याला,
चौराहों पर लाशें लुढ़के हँसे जोगिनी बाला।
धाँय धाँय फटें बंब के गोले, बोले जोगी का इकतारा।

****

हंस सड़क पर, काग महल में, बगुला न्याय चुकाए,
सिंहासन पर गिरगिट बैठा, उल्लू मंगल गाए,
कोयल तके, गधा रस घोले, बोले जोगी का इकतारा।

****

मंदिर, हाड़, पेट में चर्बी, लोग गाय को भूलें,
अंधे बहिरे हुए देवता, पाप करे सो फूले।
सोय गए पर्वत पर बम भोले, बोले जोगी का इकतारा।

****

बाजीगर की बजे डुगडुगी, नांचे मस्त जमूरे,
चंदन के निर्मल बिरवा पर लिपटे कान खजूरे।
विषधर झँप झँप खाए झकोले बोले जोगी का इकतारा।

****

9/710-31 राष्ट्रीय समस्या पर आधारित गीत रचना : 30.10.2005

चकनाचूर कर डाला

सलौना अपना भारतवर्ष था बेनूर कर डाला,
कि नाता प्यार का खुद हमने चकनाचूर कर डाला।

****

महक सौंधी उठा करती थी हर नदिया की रेत से,
नदी को गंदगी के नाम से मशहूर कर डाला।

****

न खुशबू है न सुंदरता, न कलरव है, न हरियाली,
कि मनमोहक फिज़ा को जिन्दगी से दूर कर डाला।

****

कभी भूचाल के झटके, कभी तूफाँ संमदर में,
अजल को कहर ढाने के लिए मजबूर कर डाला।

****

कहाँ इंसान को खोजेंगे हैवानों की बस्ती में,
तमस् ने आज हर इंसान को मग़रूर कर डाला।

****

धमाकों से उड़ाए जा रहे बाजार, घर, आँगन,
जरा सा घाव था अलगाव का नासूर कर डाला।

****

हवा में उड़ रही है धज्जियां प्राचीन रस्मों की,
कि दिल से लोकहित के भाव को काफूर कर डाला।

****

कभी थी नारियाँ इस देश की व्यवहार में अव्वल,
जुनूने हुस्न ने उनको हरम की हूर कर डाला।

****

अजी! सब सेकते हैं रोटियाँ इसमें सियासत की,
जगत सिरमौर, निर्मल देश को तंदूर कर डाला।

****

9/705-32 मंचीय कविता पर व्यंग्य गीत रचना : 12.9.2005

कविता हुई तवायफ

धन की हविस में भूला कवि देश को जगाना,
कविता हुई तवायफ, महफ़िल हुआ जमाना।

****

हर दिल धड़क उठा था, बाहें फड़क उठी थी,
जब वंदे मातरम् का गूंजा यहाँ तराना।

****

संवेदना हृदय से अब दूर हो गई है,
हर वक्त चाहता है कवि चुटकुले सुनाना।

****

अब तो नज़र में दो ही, पहलू हैं शायरी के,
इसको ज़लील करना, उसकी हँसी उड़ाना।

****

बहके हुए कदम हों, रोमांस हो सुरों में,
है आजकल यही तो, अंदाज़े शायराना।

****

सड़कों पै आज जो भी दुष्कर्म हो रहे हैं,
उनका सबब है केवल कविता का डगमगाना।

****

आदर्श हुए ओझल शायर की शायरी से,
अब हो गया जरूरी हर दिल को गुदगुदाना।

****

क्यों आज दीप की लौ, काजल उगल रही है,
क्यों चाहता पतंगा, जगती शमाँ बुझाना।

****

मंचो पै भाव निर्मल ढूँढे नहीं मिलेंगे,
सत्कार सुख़नवर का, किस्सा हुआ पुराना।

****

9/709-33 परिवेश पर कटाक्ष रचना : 4.12.2003

वो कह रहे विकास बहुत कर रहे लोग

वो कह रहे विकास बहुत कर रहे हैं लोग,
सागर धरा गगन पे कदम धर रहे हैं लोग।
इतना चढ़ा है आज उन्हें प्यार का जुनून,
मिलते हुए भी हाय! हाय! कर रहे हैं लोग।

****

जब से हुआ है हर शहर में हादसों का जोर,
फुटपाथ पै चलते हुए भी डर रहे हैं लोग।

****

कुछ इस तरह बढ़ा है चलन वाहनों का आज,
कुत्तों की मौत रास्तों पे मर रहे हैं लोग।

****

पश्चिम की हवा कुछ चमन में इस तरह चली,
पतझर की तरह पात पात झर रहे हैं लोग।

****

औरत के साथ आदमी का देखिए सलूक,
ब्यूटी के नाम चीरहरण कर रहे हैं लोग।

****

तकसीम करो, राज करो, नीति बन गई,
तिनकों की तरह खुदबखुद बिखर रहे हैं लोग।

****

जुल्मों में हिन्द पाक को यकसाँ बता रहे,
किस हद तलक शरारतों से भर रहे हैं लोग।

****

निर्मल सुखों की दौड़ में आगे बढ़े मगर,
हैवानियत के दौर से गुजर रहे हैं लोग।

****

8/651-34 युग धारा का व्यंग्य रचना : 12.10.2000

चल दिया चातक विवश हो.....

चल दिया चातक विवश हो, पोखरी का नीर पीने,
कर दिया उसको प्रभावित, मदिर पंकिल जिंदगी ने।

****

उम्र भर आदर्श ओढ़ा, नित्य मर्यादा बिछाई,
निठुर नभ की संपदा, एक बूँद जल भी दे न पाई,
दीन हित संवेदना तक भी न दिखलाई किसी ने।

****

सोचता है पोखरी पर, तृप्ति सब को मिल रही हैं,
विहग, जलचर, मनुज सब की, जिंदगानी खिल रही है,
मगन है सुविधा चयन में, रीत बिसराई सभी ने।

****

त्याग कर आदर्श दुनियाँ, गगनगामी हो रही है,
विपथगामी पर प्रभु की, मेहरबानी हो रही है।
शिखर चढ़ती वासना ने राम के अधिकार छीने।

****

सत्य, श्रम, तप, त्याग सब, किस्से पुराने हो गए हैं,
हैसियत को मापने के, आज पैमाने नए हैं,
कर दिया दिग्भ्रांत युग को, स्वार्थ केन्द्रित आदमी ने।।

****

4/15-35 ऋतु वर्णन रचना : 15.8.76

बरखा गीत

अम्बर में मेघ श्याम, लहरा के आया रे।
रिमझिम का मधुर गीत, बरखा ने गाया रे।।

****

धरती ने ओढ़ी है, हरी-हरी चूनरिया,
नभ के उरोजों पे सोए हैं साँवरिया।
मदिर मदिर नयनों में मुक्त मिलन छाया रे।।

****

अन्तस् की प्रीत सरिस, उमड़ चली सरिताएँ,
बिसर गई तट की लाज टूटी मर्यादाएँ।
डाल डाल हरियाली, यौवन गदराया रे।।

****

छुप छुप के देख रही, रिसियाई चाँदनियाँ,
धरती का भाग्य देख, जलती है सौतनियाँ,
सौतिन घर मन का मीत, किसको सुहाया रे।

****

झनक झनक बाज रही, झींगुर की झाँझरिया,
झूम झूम नाच रही, मतवाली पुरवैया।
मेघ नहीं प्रीत का पुनीत पर्व आया रे।।

****

5/219-36 तथाकथित विकास और यथार्थ रचना : 9.11.70

डिम् डिम् डिमक्-डिमक् डिम् डिम्

डिम् डिम् डिमक्-डिमक् डिम् डिम्।
ज्यों ज्यों साधन बढ़ते जाएँ त्यों त्यों बढ़ते जाएँ गम।

****

लो नवयुग ने ली अँगड़ाई, गगन झुका धरती इठलाई।
चंदा की गर्वीली माटी, शीष झुकाए भू पर आई।।
किन्तु मनुज पाषाण बन गया, बना बना विस्फोटक बम्।

****

खेतों में नहरें लहराई, खुद गंगा प्यासों तक आई,
कण कण का अँधियारा हरने, स्वर्ण किरण बन बिजली छाई।।
किंतु रही प्यासी मानवता, बहते आँसू सके न थम्।।

****

व्यस्त हुआ सड़कों पर जीवन, बाँध कर रहे नभ का चुंबन।
नित नूतन अविष्कारों से, नवयुग करे विगत का तर्पण।।
किंतु घृणा के घोर गर्त में, पल पल धँसते जायँ कदम।।

****

जितने बढ़े सुखों के साधन, हुए संकुचित उतने तन मन,
बिना स्नेह उजियारा कैसा, दीप बने चाहे मुक्ता कण।
रोगी क्यों कर पचा सकेगा, दूध, दही, रोटी, माखन।

****

विकसित होते रहे युँ ही गर, जाग उठेंगे इक दिन शंकर,
सब कुछ प्रलय निगल जाएगी, शेष रहेंगे पत्थर कंकर।
बोल जमूरे ! फिर क्या होगा, बढ़ते बढ़ते खेल खतम।।

****

8/635-37 व्यंग्य रचना : 18.9.99

चश्मे बदल के (गज़ल)

चश्मे बदल के जग को निहारा न कीजिए,
नित नित नवीन रंग गवारा न कीजिए।

****

जीवन स्वयं हैं चित्र कोई आइना नहीं,
औरों के रूप इस में उतारा न कीजिए।

****

जीवन नहीं वो आब जो हर ढाल पर ढले,
आराम जिंदगी का सहारा न कीजिए।

****

साँचे में ढली चीज में संभव नहीं बदल,
संगत में संस्कार बिसारा न कीजिए।

****

ऐसा नहीं कि गल्तियाँ होती नहीं कभी,
गल्ती मगर कोई भी, दोबारा न कीजिए।

****

श्रम से ही सुलझ पाएँगी जीवन की उलझने,
हे मीत! कभी श्रम से किनारा न कीजिए।

****

कलिका चटक के जब खिली, भँवरे ने यों कहा,
मदहोश जो करे वो इशारा न कीजिए।

****

जीवन सफल बनाइए, विश्वास से निर्मल,
अनुचित हो तो विश्वास हमारा न कीजिए।

****

6/49-38 व्यावहारिकता पर केन्द्रित तुलनात्मक रचना : 14.6.76

पथ कोई पाषाण कोई

काम हर अनुपम तुम्हारा,
क्या करे पहिचान कोई।
कर दिये दो भाग जग के,
पथ कोई पाषाण कोई।।

****

एक मंजिल के लिए साधन बने और सर झुकाए,
एक बाधा बन पथिक की राह में उलझन बढ़ाए।
कोई जीवन ले रहा है, कर रहा बलिदान कोई।।

****

शूल की शैया सुमन को, ओस को कोमल बिछौना,
दुःख में मुस्कान भर दी और सुख के साथ रोना,
हो रहा कोई तिरोहित, पा रहा सम्मान कोई।।

****

मोह के मधुमास में, मनमोर मोहित हो रहा है,
तनिक सुख की आस में, अंबार दुख के ढो रहा है,
नांचता कोई बिचारा, कर रहा रसपान कोई।।

****

कलुष को मादक छटा दी, सुकृत में संघर्ष डाला,
हर दिवस के साथ रजनी, रात के माथे उजाला,
कीच में निर्मल कमल है, सुरसरी नद में डुबोई।।

****

4/33-39 चेतावनी गीत रचना :

सावधान

सावधान! देश के सिपाहियों आज है चुनौतियों से सामना।
चरमरा उठी है नींव देश की मिट न जाए देश कहीं थामना।।

****

राजनीति रक्तपात चाहती, धर्म संप्रदाय बनके रह गया,
स्वार्थ ने चरित्र को चबा लिया, स्वाभिमान का मकान ढह गया।
लिप्त जातिवाद में, भ्रांति में, प्रमोद में,
राष्ट्रीयता का कहीं नाम ना। सावधान.....

****

देशभक्ति रोजगार हो गई, दृष्टिकोण का शिकार हो गई,
संकुचित इकाइयों में खो गई, कुर्सियों से चिपक चिपक सो गईं

व्यक्ति राष्ट्र से बड़ा, अस्त-व्यस्त सिलसिला
खो गई विशुद्ध राष्ट्र भावना। सावधान.....

****

हंस चूमते हैं चरण काग के, तम उगलते दीप तेज त्याग के,
जिंदगी सिसक रही है राह पर, अंधकार है तले चिराग के,
विकट जन प्रवाह में, आह में, कराह में,
न्याय का कहीं पै कोई काम ना। सावधान.....

****

देश बन चुका है लाश नीर की, लुट रही अखंडता शरीर की,
जो जिसे मिले वही निगल रहा, मिट गई पवित्रता ज़मीर की,
हर दिशा में शोर है, शत्रुओं का ज़ोर है।
देश का भविष्य है भयावना। सावधान.....

****

5/368-48 देशवासियों को चेतावनी रचना : 14.12.82

कुछ तो बाकी रहने दो.....

और कहाँ तक बाँटोगे इस देश को,
कुछ तो बाकी रहने दो अवशेष को।

****

यह भारत आसेतु हिमांचल एक था,
खम्बा से ब्रह्मा तक आँचल एक था,
गंगा, सिंधु, नर्मदा का जल एक था,
भिन्न-भिन्न थे रूप मगर दिल एक था,
भूल गए क्यों उस पावन परिवेश को,
कुछ तो बाकी रहने दो अवशेष को।

****

पहले टूटा ब्रह्मा हिन्दुस्तान से,
फिर बिछुड़े नेपाल और भूटान से,

नफरत में हो गए सभी शैतान से,
बने देश फिर बँगला पाकिस्तान से,
पागलपन में भूले हर उपदेश को,
कुछ तो बाकी रहने दो अवशेष को।

****

फिर-फिर बाँटा तुमने हिन्दुस्तान को,
छिन्न-भिन्न कर दिया सुनहरी शान को,
अलग-अलग कर दिया धर्म ईमान को,
छीन रहे अब गुरूओं से श्रीराम को,
अब तो रोको उन्मादी आवेश को,
कुछ तो बाकी रहने दो अवशेष को।

****

तुम्हें स्वार्थ सत्ता से इतना प्यार है,
लगता है मिलकर रहना दुश्वार है,
कदम कदम पर गोली, बंब कटार है,
बाढ़ खेत खा जाने को तैयार है
देश बचाओ, छोड़ो अलग प्रदेश को,
और कहां तक....
कुछ तो बाकी रहने दो अवशेष को।

****

हिन्दु मुस्लिम सिक्ख ईसाई नाम है,
सभी एक माँ की निर्मल संतान है,
एक रहें तो अपनी ऊँची शान है,
जननी के टुकड़े करना बौरान है,
रूष्ट करो ना रब, शंकर दशमेश को
और कहां तक.....

****

आरी बसंत

आरी बसंत तोहे पतझर पुकारे,
पछवा के अँचरा से अँगना बुहारे।

****

झुलसाती यादों में खोए खोए नयना,
उपवन में संग संग बीते दिन रैना।
मन के झरोखे से सब कुछ निहारे।।

****

तेरा सिंगार और उसकी चिंगारियाँ,
तेरी उदासी और उसकी किलकारियाँ।
अपना ही बिंब आज उसको धिक्कारे।।

****

तेरी जवानी को चूमा मधुमास ने,
कोयल के गीतों ने फूलों के हास ने।
विधवा पतझार अपत् डार को पसारे।।

****

गर्वीले मस्तक का झुकना पतझार है,
मस्तक झुकाने का फल ही बहार है।
नम्रता नगण्यता के दोष को निवारे।।

****

कर दे सिंगार फिर बसंत अपत डार का,
व्यथित हृदय निर्मल हो परिचय दे प्यार का।
प्रीत के पुनीत गीत पुरवा को प्यारे।।

****

4/26-42 अन्तर्व्यथा का गीत रचना : 13.06.82

किस काम का तराना

तूफाँ में लुट गया है,
बुलबुल का आशियाना।
अब क्या बहार उसको,
किस काम का तराना।।

****

चुन चुन के तिनका तिनका, मन से जिसे बनाया,
पल भर में लुट गया वो, जैसे भरा खजाना।

****

पतझड़ में भी जहाँ पर जीवन खिला खिला था,
सीखा था जहाँ रह के सुख दुख में मुस्कुराना।

****

फूलों से दोस्ती थी, कांटों से प्यार अपना,
अपनी वफ़ा के नग़में, गाता था कुल ज़माना।

****

जाने कहाँ से आई, नफरत की तेज आँधी,
छितरा गया है गुलशन, वहशत भरा फ़साना।

****

गुलशन से वैर गुल का, बद किस्मती चमन की,
अब उठ गया चमन से, खुशियों का आबोदाना।।

****

जीवन जहां दुखी हो, ग़मगीन हो नज़ारें,
उजड़े चमन में निर्मल, किस काम का तराना।।

****

5/230-45 संदेश गीत रचना : 7.10.71

निष्क्रिय बैठा रहे सदा जो.....

निष्क्रिय बैठा रहे सदा जो, मंज़िल उसको छोड़ चले।
मंज़िल बस उसको मिलती है, जो मंज़िल की ओर चले।

****

कल-कल करती व्याकुल सरिता, उछल-उछल बढ़ जाती है,
बाधाओं से लड़ते-लड़ते, सागर में मिल जाती है।
पछताए गति हीन किनारा, लहर-लहर दिल तोड़ चले।

****

मेहनत से सूखी धरती भी, हरी भरी हो जाती है,
श्रम से ही उजड़े उपवन में, ऋतु बसंत फिर आती है।
गतिविहीन पथ के पाहन से, पथिक सदा मुंह मोड़ चले।

****

गुल शबनम के आँसू पीता, काँटों पर मुस्कराता है,
दीपक अपना लहू जलाकर, निर्मल ज्योति जगाता है।
प्यासा शिखर तरसता रहता, चातक सार निचोड़ चले।

****

8/79-44 गीतासार रचना : 3.7.83

चेतन अविनाशी रे

नाशवान तन में शोभित चेतन अविनाशी रे,
जरा जन्म से दूर रहे वो अन्तर्वासी रे।

****

पावक जिसको जला न पाए, पानी जिसको गला न पाए,
दूर सदा ही रहती जिससे, यम की फाँसी रे.....

****

धरती के जड़ चेतन सारे, जग मग करते चाँद सितारे,
सब चमकें मेरी आभा से, छोड़ उदासी रे.....

****

ना वो मरे ना तू संहारे, फिर क्यों इतनी व्यथा विचारे,
उठ अर्जुन क्यों धर्म तजे, बन कर सन्यासी रे.....

****

जब-जब होय धर्म की हानि,
कष्ट उठाएँ निर्मल प्राणी,
आते हैं तब तब धरती पर
घट घट वासी रे.....

****

2/15-45 आत्मनिवेदन एवम् सदोपदेशात्मक गीत रचना : 20.11.70

झूला तुझे झुलाऊँ

झूला तुझे झुलाऊँ, जग को झुलाने वाले,
जीवन की डोर अब तो कर दी तेरे हवाले।

****

माया की डालियों पर संसार का हिंडोला,
इसमें जन्म मरण के झोले तेरे निराले।

****

निर्गुण कोई बताए कोई सगुण बताए,
खुद की भटक रहे हैं मार्ग दिखाने वाले।

****

तप ध्यान योग साधन तुझको रिझा न पाएँ,
लेकिन तुझे नचाएँ, मन से बुलाने वाले।

****

जीवन की नाव निर्मल, मझधार में फँसी है,
चाहे इसे डुबो दे, चाहे इसे बचा ले।।

****

6/116-46 आदर्श व्यवहार पर केन्द्रित गीत रचना : 20.5.99

मानुष जनम अनमोल है

मानुष जनम अनमोल है ये जान लीजिए,
हर वक्त, हर जगह पै हरी नाम लीजिए।

****

पग पग पै वासना से पड़े दिल को वास्ता,
अच्छा यही है दिल को जरा थाम लीजिए।

****

सुख पुण्य का प्रताप है, दुख पाप का सिला,
अच्छे बुरे को आप ही पहचान लीजिए।

****

घेरे हुए हैं आपको, बालक बड़े जवान,
दीजे कहीं पै प्यार कहीं ज्ञान लीजिए।

****

किस्मत बड़ी है आपको मानुष जन्म मिला,
इस तन से आप भी कोई, शुभ काम लीजिए।

****

वाणी मधुर हो आपकी, निर्मल हों सभी काम,
बस इतना कहा आप मेरा मान लीजिए।

****

जग में आके

जग में आके कुछ न कमा के, जीवन लुटा के चल दिए,
ओ मतवाले! यह तो बता दे, जन्म लिया था किस के लिए।।

****

खाया, पीया, तन को धोया, सुख में सोया, संकट में रोया,
विषयों में दीवाना हुआ है।
धन के पीछे मान लुटाया, माया में भगवान गँवाया,
प्रियतम से बेगाना हुआ है।
कि तेरे जैसे हज़ारों आए जो सिर फिरा के चल दिए।।

****

चंचल बचपन, मस्त जवानी, जीवन की हर बात सुहानी,
निकल गए ज्यों नदिया का पानी,
धर्म न जाना, कर्म न जाना, सत्संगत का मर्म न जाना,
पाप कमाया भर जिन्दगानी,
ये भक्त तन के गुलाम मन के, सब कुछ लुटा के चल दिए।

****

यह जग सारा कर्मों का मारा, कहीं तरंगे कहीं किनारा,
कहीं पै आँसू, कहीं खुशी है,
हजारों संकट कदम-कदम पर कभी न आए थकान मन पर,
अजीब जंजाल जिंदगी है।
वही यहाँ खुशनसीब निर्मल, जो नाम पाके चल दिए।

****

प्यार बिन जिंदगी नहीं होती

लाख दीपक में तेल बाती हो, ज्योति बिन रोशनी नहीं होती,
लाख वैभव भरा हो आँगन में, प्यार बिन जिंदगी नहीं होती।।

****

ये सजावट वो झूमते श्रोता, ऊँची आवाज में रसीले भजन,
लाख संगत सजी हो साज़ों से, भाव बिन बंदगी नहीं होती।

****

देश का हित न ध्यान में रखना, तंग करना गरीब जनता को,
फूँक देना बसों को, सड़कों पर, कोई मर्दानगी नहीं होती।।

****

चाहे कितने ही तर्क हों सच्चे, सामने हो गवाह मनचाहे,
न्याय संभव नहीं अदालत में, जब तलक पैरवी नहीं होती।।

****

माल घटिया हो, तौल में हो कमी, रूखा व्यवहार रहे ग्राहक से,
धोखेबाजी कीलत तिजारत में, पुरअसर बानगी नहीं होती।।

****

व्यंग्य से जब दुखे किसी का दिल, जो परेशाँ व पशेमान करे,
हास परिहास गुदगुदी के बिना, दिलरूबा दिल्लगी नहीं होती।।

****

तन हो सुंदर, सुडौल, आकर्षक, बोल मीठे हो मुँह से फूल झड़ें,
सत्य व्यवहार के बिना निर्मल, भीतरी गंदगी नहीं होती।।

****

5/300–49 संदेश गीत रचना : 19.3.79

जिंदगी को सँवारो

जिंदगी को सँवारो अगर प्यार से,
सारी दुनियाँ तुम्हारी संवर जाएगी,
जिंदगी खूबसूरत अगर हो गई,
खूबसूरत ज़माने को कर जाएगी।

****

सूखी डाली पे बुलबुल चहकती है क्यों,
फूल बिन क्यों भँवर गुनगुनाता फिरे,
उनको विश्वास है कल बहार आएगी,
वाटिका फिर नज़ारों से भर जाएगी।।

****

दिल तो नदिया किनारे का एक पेड़ है,
उसकी छाया में लहरों का संसार है,
एक लहर उसको बेचैन करके चली,
एक अन्तस् में उसके उतर जाएगी।।

****

जिंदगी एक मछली है तालाब की,
प्यार का जल उसे हर घड़ी चाहिए,
तुमने जल को सुखाया अगर आग से,
छटपटाके ये मछली भी मर जाएगी।।

****

सारा संसार क्रीडास्थली प्यार की,
जीत में भी खुशी हार में भी खुशी,
प्यार पतवार है जिंदगी के लिए,
प्यार से तेरी नौका भी तर जाएगी।।

****

जिंदगी एक कशिश है ये बोझा नहीं,
तुम निराशा से इसको न बोझिल करो,
अपनी आँखों पै चश्मा हो ग़र प्यार का,
हर तरफ ज्योति निर्मल बिखर जाएगी।।

****

6/43–50 परिवेश और व्यवहार पर केन्द्रित गीत रचना : 25.7.75

आदमी बेवफा बन गया

तेरी कुदरत वही की वही है,
आदमी बेवफा बन गया है।
ये तेरे ही करम का सिला है,
एक ज़र्रा खुदा बन गया है।

****

सबके कर्मों की सीमा बनाकर, एक दिन तूने ये जग रचाया,
जन, गगन, भू, पवन, आग, पानी, सबको जीवन का मार्ग बताया,
और सब तो नियम मानते हैं, आदमी बेहया बन गया है।

****

कैसा धीरज धरा ने दिखाया, कैसी सागर में गंभीरता है,
चाँद, सूरज, सितारों की झिलमिल, कैसी बादल के दिल में दया है,
आज इंसान इन सा नहीं है, जुल्म की इन्तहा बन गया है।

****

इसने धरती की छाती को छेदा, आग पानी में इसने लगाई,
दीन दुखियों के आँसू न पौछे, चाँद तारों पै नज़रे जमाई,
भावना उसकी निर्मल नहीं है, वह स्वयं वासना बन गया है।

****

8/78-51 यथार्थ पूजा पर उपदेश गीत रचना : 31.3.78

झूठा वंदन झूठा अर्चन

झूठा वंदन झूठा अर्चन, बिन प्रेम सभी कुछ वीराना।
भगवान कहाँ पर रहता है, तूने न अभी तक पहचाना।।

****

वह चमक रहा जगमग जगमग, अंबर के चाँद सितारों में,
तू बांध रहा उस ताकत को, ऊँची नीची दीवारों में,
दर्शन तुझको कैसे होगा, वह दर्पण है तू दीवाना।

****

वह शूलों पर भी मुस्काए, तू फूलों पर भी रोता है,
मुस्काए गुल रोए शबनम, सुख दुख कर्मों से होता है।
दीपक से ही जा टकराए, तम का अनुरागी परवाना।

****

वह जीवन का संदेश लिए, नित तेरे द्वारे आता है,
तू उसे भिखारी कह कहकर, गाली देता ठुकराता है।
तू देख जरा प्यासी भू पर, बादल का फुँहारे बरसाना।

****

भँवरे की करूण पुकारों से, नित बंद कमल खिल जाता है,
प्यासे चातक की खातिर ही, अंबर अमृत बरसाता है,
जीवन का निर्मल सार यही, जिसने खोजा उसने जाना।।

****

8/641-52 व्यंग्य गीत रचना : 13.2.2000

जीवन को विक्षिप्त न कर दें

नया लक्ष्य है, नई डगर है, चलना पथिक संभल के।
जीवन को विक्षिप्त न कर दें, स्वप्न सुनहरे कल के।।

****

हरिश्चन्द्र! तुमने सीखा बस सत्य हेतु बिक जाना,
किंतु आज तो स्वार्थ हेतु पड़ता है सत्य भुलाना।
कैसे पचा सकोगे राजन्! भ्रष्ट खेल छल बल के।।

****

लक्ष्मण! तुमने तो केवल सीता के चरण निहारे,
कर्णफूल पहचान न पाए, बेबस नयन तुम्हारे,
अब कैसे देखोगे भैया, ब्रेकडांस ट्विंकल के।।

****

हे गौतम! तुमने तो सारे जग को प्यार सिखाया,
किंतु आज तो भारत में, हिंसा का मौसम आया,
कब तक तुम पौछोगे भगवन् विकल अश्रु निर्बल के।।

****

गांधी तुमने तो भारत हित, अपने प्राण गँवाए,
किंतु आज तो इस धरती पर बाड़ खेत को आए।
कैसे सहन करोगे बाबा, दो स्वरूप हर दल के।

****

पश्चिम की आंधी ने सबको, सुविधा मुखी बनाया,
सुख साधन की धुन में हमने, हर आदर्श भुलाया।
निर्मल फूल बने अंगारे, छल छल नयना छलकें।।

****

4/10-52 यथार्थ केन्द्रित गीत रचना : 21.11.82

सृजन पीछे पहले संहार

सृजन पीछे पहले संहार
मधुर झंकृति से पहले सदा,
कसकते हैं वीणा के तार।।

अपत होती है पहले डाल, तभी आते हैं कोमल पात,
झूम कर मुस्कानें से पूर्व पुष्प सहते हैं कटु संघात।
वाटिका में बसंत से पूर्व अनर्गल आती है पतझार।।

****

रेत में धँसता पहले बीज, सहन करता भीषण तम ताप,
कलेजा फट जाता दुख देख, फूटता अंकुर तब चुपचाप।
उपज को घर लाने से पूर्व, कृषक खुद होता बेघरबार।।

****

स्नेह जलता, जलती है बात, दीप को मिलता तभी प्रकाश,
सरस रिमझिम से पहले सदा, उमड़ता भीषण झंझावात।
महानद से मिलने से पूर्व, छिन्न होती सरिता की धार।।

****

मिलन के मधुर क्षणों से पूर्व, रात भर होते नयन अधीर,
अधर की मुस्कानों से पूर्व, विकल करती अन्तस् को पीर।
प्रलय के शिव तांडव के बाद सृजन होता है क्रमानुसार।।

****

7/563-53 संदेश कारक रचना : 22.6.96

खिजाँ का छोड़ दों आँचल

खिजाँ का छोड़ दों आँचल, बहारों में चले आओ।
अंधेरों से निकल, उजले नज़ारों में चले आओ।।

****

घिरे बैठे हो कब से तुम, जलन के तंग घेरो में,
अरे, अब तो मुहब्बत के, इदारों में चले आओ।।

****

तपन धरती की हरने को, गगन में मेघ घिर आये,
दया के स्रोत बन, तुम भी, हजारों में चले आओ।।

****

बहुत अब तक उड़े हो, ऐ उकाब! उल्टी हवाओं में,
चलो अब तो तनिक, शीतल, बयारों में चले आओ।।

****

हिमालय की रूपहली चोटियाँ, तुमको बुलाती है,
न अब उलझो बबूलों में, चिनारों में चले आओ।।

****

चमन में फूल बन महको, बहो नदियों की धारा बन,
सही मारग दिखाने को, सितारों में चले आओ।

****

तुम्हें इंसानियत का वास्ता है, ऐ वतन वालों,
कुटिलता, त्यागकर, निर्मल विचारों में चले आओ।।

****

6/48-54 व्यावहारिकता पर केन्द्रित गीत रचना : 6.6.76

पास रहे पास हैं, दूर गए दूर

दुनिया का है ये पुराना दस्तूर,
पास रहे पास हैं दूर गए दूर।
धरती के लोग सदा सामने ''हुजूर''।।
पास रहे पास हैं दूर गए दूर।

****

कितनी तरंगे लगें तट के गले,
कितनों की प्रीत पले अंबर तले।
दूर हुए प्रीत का घमंड हुआ चूर।।

****

राधा कन्हैया की प्रीत थी ललाम,
श्याम रटें राधे तो राधा रटें श्याम।
बिछुड़े पर ज़िदा रहे हो के मजबूर।।

****

कितने ही आए यहाँ कितने गए,
धरती पुरानी है, रंग नित गए,
किसके लिये मंद हुआ सूरज का नूर।।

****

मिलने बिछुड़ने में मस्त है इंसान,
यादों के पंखों पर रह जाते नाम।
निर्मल परिवर्तन में किस का कुसूर।
पास रहे पास हैं दूर रहे दूर।।

****

5/374-55 उपदेशात्मक गीत रचना : 21.6.83

आदर्शों की कठिन डगर पर

आदर्शों की कठिन डगर पर, शूलों का उपहार है,
यहाँ मगन है वही कि जिसको, संघर्षों से प्यार है।

****

मर्यादा के मग में, नंगे पाँओं भटकता राम है,
धरा बिछौना अंबर चादर, बीहड़ में विश्राम है,
सतवंती सीता नित व्याकुल, आँखों में जलधार है।

****

परहित का संकल्प लिये जो, पथिक बढ़े इस राह में,
बिके, लुटे, मिट गए अलक्षित, बहते पुण्य प्रवाह में,
चकाचौंध से परे अनामय, सत्यनिष्ठ संसार है।

****

पथ से डिगते ही जग में, भौतिक सुख का भंडार है,
सुरा, सुंदरी, सेज सभी का, दुराचार आगार है,
किंतु सत्य के जीर्ण भवन की, जर्जर हर दीवार है।

****

सज्जन और दुराचारी की, बहुत सरल पहिचान है,
सज्जन हरता कष्ट सभी का, दुर्जन हरता प्राण है,
दुर्जन प्रभुता का मतवाला, सज्जन जगदाधार है।

****

विजय सदा होती है सत की, और असत की हार है,
किंतु सत्य के दुर्गम पथ पर, चल पाना दुश्वार है,
सूरज का तपते रहना ही, धरती का श्रृंगार है।

****

4/43-56 देश व संस्कृति प्रेम व उदबोधन का गीत रचना : 15.8.68

जग को स्वर्ग बना जाना....

वीर हो हिंदुस्तान के, रक्षक हो इंसान के,
संकट में घबराना ना, अपना शीष झुकाना ना,
जग को स्वर्ग बना जाना।

****

दुनियाँ है बलवानों की, तोपों और विमानों की,
इस धरती पर प्यार नहीं, पहले सा संसार नहीं,
लड़ना है तुमको उनसे, पीड़ित है धरती जिनसे।
मानव का आधार बनो, धरती का श्रृंगार बनो।
तुम कायर कहलाना ना.....।

****

जब से आजादी आई, जग की नजरें ललचाई,
पर्वत की मालाओं से, सागर से सरिताओं से,
उमड़ घुमड़ दुश्मन आए, संकट के बादल छाए।
तुमने उनको ललकारा, दुश्मन का दलबल हारा।
वह इतिहास भुलाना ना.....।

****

धरती माँ का प्यार भुला, मानव नभ की ओर चला,
प्रलयंकर हथियारों से, फौलादी टंकारों से,
यह धरती थर्राई है, मानवता घबराई है,
उठो देश के परवानों, माँ की निर्मल संतानों,
झूठा पथ अपनाना ना.....।

****

4/19-57 अल्प बचत पर केन्द्रित गीत रचना : 15.9.78

थोड़ा थोड़ा अगर बचाए

बूँद बूँद से सागर बनता, कण-कण से पर्वत मालाएँ,
मिले गरीबी से छुटकारा, थोड़ा थोड़ा अगर बचाएँ।।

****

केवल आज न जीना हमको, कल भी तो है हमको जीना,
सब कुछ आज न खा पी डालो, कल भी होगा खाना-पीना।
बिन सोचे क्या पूरी होगी, अनजाने कल की आशाएँ।।

****

केवल तुम ही नहीं, तुम्हारे पीछे है परिवार सलौना,
उसका भी पोषण करना है, खुद खाकर संतुष्ट न होना।
बिना स्नेह क्या दीप जलेगा, बिना दीप कैसी प्रतिभाएँ।।

****

जीवन का संगीत सदा, बसता है मेहनत के तारों में,
अंधकार सोया करता है, अक्सर कोठी में कारों में,
जीवन से हारा यौवन ही मदिरालय का मान बढ़ाएँ।

****

आज मिले जो साधन सुख के, कल भी हमको मिल सकते हैं,
आज खिले जो फूल चमन के, ये सब कल भी खिल सकते हैं,
यदि अपने निर्मल जीवन को थोड़ा खोएँ अधिक बचाएँ।।

****

5/247-58 उद्‌बोधन गीत रचना : 4-4-74

धीरे धीरे ले चल माँझी

धीरे धीरे ले चल माँझी, तरनी को उस पार,
रैन अंधेरी, यह पुरवैया, डगमग है पतवार।

****

सागर की लहरों में हलचल, तन में हलचल, मन में हलचल,
कण-कण को झकझोर रहा है, उछल उछल कर ज्वार।

****

उमड़ घुमड़ घनघोर घटाएँ, भू पर बरसें, नभ में छाएँ,
अंधकार में भी दो नयना, तट को रहे निहार।

****

दो बाहों का तुझे सहारा, चाहे कितनी दूर किनारा,
चल लहरों का जिगर चीरता, होगी नैया पार।।

****

नव प्रभात उस पार मिलेगा, मन-पंकज उस पार खिलेगा,
शूलों की शैया पर सोता, फूलों का संसार।।

****

इंसानियत की ज्योति जगाते चले चलो.....

इंसानियत की ज्योति जगाते चले चलो।
दुनियाँ से दुःख दर्द मिटाते चले चलो।

****

पीड़ित गरीब लोग खुशी उनसे दूर है,
जीवन में अंधकार जिगर गम से चूर है।
इनसे करे जो प्यार वही कोहेनूर है,
दुखियों के दिल में प्यार बसाते चले चलो।

****

दुनिया से प्रीत दोस्ती कब की विदा हुई,
हर तरफ दीखती है जलन और बेरूखी,
धरती जो कभी स्वर्ग थी शमसान बन गई,
उजड़े चमन में फूल खिलाते चले चलो।

****

जुल्मों सितम से आज मनुजता उदास है,
धरती गगन सभी को मुहब्बत की प्यास है,
संसार का पशुता ने किया सर्वनाश है,
प्यासे हृदय में आस जगाते चले चलो।

****

धरती धधक रही है दुखी आसमान है,
इंसानियत ही आज सिर्फ बेजुबान है,
इंसान है वही जिसे निर्बल का ध्यान है,
निर्मल डगर पे प्राण लुटाते चले चलो।

****

गीत मेरे .....

गीत मेरे जिन्दगी से प्यार करना सीख ले,
छोड़ दे आकाश, धरती पर विचरना सीख ले।।

****

चंद्रमा, सूरज, सितारे, विकल विगलित मौन है,
जो तुझे अनुराग दे, आकाश में वह कौन है?
तू धरा की रेत से, श्रृंगार करना सीख ले।।

****

यह धरा सुंदर सजीली, भाव की भागीरथी,
गोद में ममतामयी के मुस्कुराती जिंदगी।
प्रीत के नवनीत का आहार करना सीख ले।।

****

देख तट की बाँह में सरिता समाती रात दिन,
फूल को मधुमय पवन पलना झुलाती रात-दिन।
मधुप की गुंजार पर, अभिसार करना सीख ले।।

****

नित्य सुख-दुख में उछलता जूझता जीवन यहाँ,
मधुर, आकर्षक, मनोहर दृश्य अंबर में कहाँ?
संग हँसना, संग हाहाकार करना सीख ले।।

****

शब्द की सामर्थ्य तुझ में, भाव का आलोक है,
स्वर्ग का उन्माद तज दे, सुघड़तम यह लोक है।
जगत में निर्मल मधुर झंकार करना सीख ले।।

****

4/5-61 गुरु भक्ति गीत रचना : 31.8.74

चाहते हो यदि उजाला.....

चाहते हो यदि उजाला, दीप का सिंगार कर लो,
घी भरो, बाती जगाओ, सिर झुका सत्कार कर लो।

****

हो रहा है पंथ धूमिल, छा रहा भीषण अंधेरा
तुम बढ़ो विश्वास लेकर, लक्ष्य पर अधिकार कर लो।

****

रोशनी के शत्रु बनकर, हर न पाओगे अंधेरा,
तोड़ दो घेरा तिमिर का, रोशनी से प्यार कर लो।

****

जब तलक व्यापक अंधेरा, यातना मिलती रहेगी,
ज्योति की आराधना से, विश्व का उपकार कर लो।

****

रोशनी से तम हटेगा, कीट जल जल कर मरेंगे,
भस्म होने दो कलुष को, निष्कपट व्यवहार कर लो।।

****

ज्ञान-दीपक-गुरू विकल है, किस तरह होगा उजाला?
दो उसे आधार निर्मल, चिर सुखी संसार का लो।।

****

1/16-62 संदेश गीत रचना : 6.8.53

है दर्शन आसान, समर्पण ही मुश्किल है

धधक धधक कर वन की ज्वाला जल जाती है,
भस्मसात वन की शोभा को कर जाती है।
सरल बहुत आघात, रसायन ही मुश्किल है।

****

उपवन की शोभा समाप्त होते ही पक्षी,
जाते हैं सब छोड़ विटप, हैं उत्तम भक्षी,
सरल बहुत उपभोग, तपस्या ही मुश्किल है।

****

चंचल जीवन दर्शन से आनन्दित सब है
जीवनदायक के दर्शन बस कहीं कहीं है
है दर्शन आसान, समर्पण ही मुश्किल है।

****

6/55-63 संतवचनों पर आधारित द्वयार्थक गीत रचना : 18.7.77

निर्गुण अभिव्यक्ति

सखि, कर सौलह सिंगार, पिया घर आएँगे।
मन रह रह करत पुकार, पिया घर आएँगे।।

****

केशर, चंदन, इत्र लगाकर तन धोया सौ बार,
नस नस में मादकता भर दे, अंग अंग महकार।
मोरे केसन गजरा डार, पिया घर आएँगे।

****

चंचल शाल, कसूमल सारी, गल मोतियन का हार,
मनहर का मन-मधुप रिझाने, कर कोमल कचनार।
मोरे नयनन कजरा सार, पिया घर आएँगे।

****

रस के लोभी मीत हमारे, मैं निर्मल रसधार,
मैं अपने प्रियतम को प्यारी, मुझको प्रियभर्तार,
मैं तो अचल सुहागिन नार, पिया घर आएँगे।

****

4/52-64 अभिवादन गीत रचना : 13.11.86

स्वागतम्

स्वागतम् स्वागतम् स्वागतम्
शुभ रहा आपका आगमन।

****

आप आए बहार आ गई,
ताज़गी बेशुमार आ गई,
ज़िदगी झूम कर गा उठी,
दिल में खुशियाँ हज़ार आ गई,
खिल उठा आज सारा चमन।
शुभ रहा आपका आगमन।

****

हम ज़मी और आप आसमाँ,
सोचते हैं बिठाएँ कहाँ,
मन का मन्दिर तुम्हारे लिये,
नयन-पथ से पधारो यहाँ,
शब्द के ये समर्पित सुमन।
शुभ रहा आपका आगमन।।

****

अपना छोटा सा संसार है,
हर तरफ प्यार ही प्यार है,
सब के अधरों पे मुस्कान है,
सब के अंतस् में झंकार है।
दिव्य धरती है निर्मल गगन।
शुभ रहा आपका आगमन।।

****

6/105-65 प्रेम केन्द्रित कोमल गीत रचना : 8.5.87

पंकज जहाँ खिलेगा

पंकज जहाँ खिलेगा, मधुकर वहीं रहेगा।
यह प्रेम की कहानी, युग-युग चमन कहेगा।।

****

गिरि की गरीयता को, नदिया नकारती है,
सागर की ओर निशिदिन, सरिता का जल बहेगा।।

****

सरिता सरोवरों में, कितना ही जल भरा हो,
एक स्वाति बूँद के हित, चातक तृषा सहेगा।।

****

मोहन की बाँसुरी में है प्रेम का तराना।
जो भी इसे सुनेगा, घर पर न वो रहेगा।।

****

गुल को गले लगा लो, कोयल ये कह रही है,
मौसम जो आज आया, वो कल नहीं रहेगा।।

****

महलों की बंदिशों में, घबरा गई गुजरिया,
राधा की बाँह निर्मल, कब साँवरा गहेगा।।

****

9/694-66 प्रेम गीत रचना : 16.5.2004

तू मुरली मैं मधुमय गुंजन

तू मुरली मैं मधुमय गुंजन
लगता है नभ से फिर उतरे,
वृंदावन में राधा मोहन।

****

जब तू राग बसंती गाए,
अंग-अंग मेरा लहराए,
तू कोयल, चंचल, मतवाली,
मैं सुरभित मुस्काता उपवन।

****

प्रिय से मिलकर जो हर्षाए,
पल पल प्रिय की प्यास बुझाए,
तू तरंग चंचल सरिता की,
मैं तट की बाहों का बंधन।

****

तरूवर से लिपटे लहराए,
नस-नस में खुशबू भर जाए,
तू बलखाती मस्त नागनिया,
मैं सुगंध बिखराता चंदन।

****

जो हर पल आए और जाए,
जड़ तन को चैतन्य बनाए,
तू अविरल साँसों की डोरी,
मैं हँसता, मुस्काता यौवन।

****

जो तन मन की प्यास बुझाए,
सुंदरता का मान बढ़ाए,
तू खिलती कलिका, अलबेली,
मैं मधुकर का मादक चुंबन।

****

पुरवा के संग नभ पर छाए,
रिमझिम बरसे भाग्य जगाए,
तू अमृत छलकाती बदली,
मैं सौरभ सरसाता सावन।

****

नभ से उतरे भू पर छाए,
हर मंदिर मुखरित कर जाए,
तू गोधूलि उड़ाती संध्या,
मैं निर्मल प्रिय अर्चन वंदन।

****

5/254-67 वर्षा केन्द्रित विरह गीत रचना : 10.9.74

प्रेम नहीं कहलाता

प्रेम नहीं कहलाता प्रियतम! तज देना मझधार!
दूर दूर रहकर तरसाना, यह कैसा व्यवहार।।

****

याद करो उस मधुर मिलन को, श्यामल तन को, चंचल मन को,
जब अन्तस की प्यास बुझाने, तुम बरसे सौ बार!

****

तुम्हें रिझाने ओ साँवरिया, ओढ़ी मैंने हरी चुनरिया,
सूख गया फूलों का गजरा, बिखर गया सिंगार।

****

तुमने दूर लगाया डेरा, विरहन को विपदा ने घेरा,
जाने किसने लूट लिया वह हरा भरा संसार।

****

आओ हे घनश्याम सलौने! जीवन बगिया में सुख बोने,
अब तो सुन लो निष्ठुर प्रियतम, निर्मल करूण पुकार।

****

5/259-68 विरह गीत रचना : 27.12.74

(वियोग श्रृंगार)

एक मिलन की रात

एक मिलन की रात सुहागिन, कर सोलह सिंगार,
कल होंगे उस पार सजनवा, तू विरहन इस पार।

****

अब तक प्रिय थे संग तुम्हारे, सुख से कितने दिवस गुज़ारे,
आखिर एक दिन तो आनी थी, जीवन में पतझार।

****

छोटा है संसार मिलन का, लेकिन यह संबल जीवन का
इस पौधे को सींचा करती, आंसूं की जलधार.....

****

आज करो जी भर कर बातें, बीते रैना स्वप्न सजाते,
रह जाएगा कल जीवन में, यादों का अंबार।

****

मधुकर दूर चला जाता है, निर्मल प्रेम छला जाता है,
छीन सका है कौन कली से, आंसूं का अधिकार।

****

5/242-69 श्रृंगार गीत (संयोग) रचना : 6.11.72

छुप छुप के कौन मेरे सपनों में आया रे.....

छुप छुप के कौन मेरे सपनों में आया रे,
मदमाता, मधुर गीत, अन्तस् ने गाया रे।।

****

मन पंछी बोल रहा, अमृत रस घोल रहा,
तन की फुलबगिया में, मगन मगन डोल रहा।
आंगन में सावन मन भावन घिर आया रे।।

****

प्रीत जगी, गीत जगा, सोया मन मीत जगा,
उन्मादी सपनों में, खोया संगीत जगा।।
आशा के आँचल में चाँद उतर आया रे।।

****

यौवन का भार लिये, मदिर मदिर प्यार लिये,
किस्मत की कामिनियाँ, ठाड़ी सिंगार किये।।
खनन खनन! कंचन का कंगना खनकाया रे।।

****

4/70 अभिवादन गीत रचना : 4.11.83

पावन प्रेम वाटिका में

पावन प्रेम वाटिका में, तुम कुसुमाकर सम आए।
खिले फूल कलियाँ मुस्काई, पात पात लहराए।।

****

हुए स्वप्न साकार सुनहरे, आँगन में अरूणाई,
शैशव बीता मदिर लजीली, सम्मुख है तरूणाई,
मन की वीणा, मधुर सुरों में गीत मिलन के गाए।

****

मानों चंदा मिला किरण को, लतिका को तरू प्यारा,
मेघ मिला मानो मयूर को, मधुमय मिलन हमारा।
प्रिय तुमने नव रश्मि-पुंज सम, मन के कमल खिलाए।

****

तुम शीतल जल के निर्झर, हम निश्चल मौन किनारे,
तुम मंथर बहते समीर, हम सौरभ सजन तुम्हारे,
अचल हमारा प्रेम कल्पतरु, जो न कभी मुरझाए।

****

अभिनंदन अभिनंदन प्रियतम, नयन द्वार से आओ,
देव, हमारे मन-मंदिर को, अपना सदन बनाओ।
प्रेम तुम्हारे परस मात्र से जग निर्मल बन जाए।

****

10/726-71 यथार्थ एवं आदर्शपूर्ण रचना रचना : 3.2.2007

(केन्द्र बिन्दु - भ्रूण हत्या)

जो न समझे वही अनारी है।

हर सफलता का राज नारी है,
जो न समझे वही अनारी है।

****

जीव नूतन धरा पै लाती है,
पालती, आदमी बनाती है,
मातृरूपा, सभी को प्यारी है।
जो न समझे वही अनारी है।

****

भाई-बहना का प्यार पावन है,
एक फागुन, तो एक सावन है,
एक है फूल, एक क्यारी है,
जो न समझे वही अनारी है।

****

बनके धरनी सँवारती घर को,
हर चुभन से उबारती नर को,
उसने नर की डगर बुहारी है,
जो न समझे वही अनारी है।

****

जिनको नित पूजते मनाते हैं,
रात भर जिनके भजन गाते हैं,
माँ भवानी भी एक नारी है,
जो न समझे वही अनारी है।

****

भ्रूण कन्या का गिराने वालो,
बात समझो, अनीति को टालो,
स्रोत निर्मल सृजन का नारी है।
जो न समझे वही अनारी है।

****

2/127-73 बहन की कोमल भावना रचना : 12.8.65

भेज रही हूँ राखी

भेज रही हूँ राखी के मिस, भैया, मन का प्यार,
ये राखी के तार न समझो, है उर की झंकार।

****

वह बाबुल का प्यारा आँगन, वह अँबुआ की छाँव,
वे सावन के झूले झिलमिल, वह छोटा सा गाँव,
अब तो जिनकी यादें ही बस, आती है हर बार।।

****

जब पुरवैया झूम-झूम कर, गाती थी मधुगीत,
लहरा कर नदिया की लहरें, भरती मन में प्रीत।
हमें कभी परवाह नहीं थी, था मनहर संसार।

****

यह यौवन अभिशाप कि जिसने, किया हमें मजबूर,
छीन ले गया शैशव हम से, कर अल्हड़पन दूर,
वह मुस्काता जीवन छूटा, बदल गया संसार।

****

अब तो केवल जीना भर है, सभी उमंगे मार,
भैया, बाबुल, मैया सखियाँ, स्वप्न हुआ वह प्यार,
यह कैसा निष्कासन जिसको, सब करते स्वीकार।

****

जीवन की गति देख न पाते, निर्मल मन के तार,
इसीलिए राखी में मैंने, पिरो दिया है प्यार,
खो जाना बिसरी यादों में, फिर से तुम इकबार।

****

2/70-74 नारी समस्या पर गीत रचना : 4.1.64

उपेक्षिता

तुम जिन अलबेली रातों में मुँह मोड़ गए,
मैं अब भी उनको याद किया करती हूं।
तुम जिस यौवन को जहर समझ कर छोड़ गए,
मैं उसी जहर की घूँट पिया करती हूं।

****

है याद मुझे तुमने जब अपने हाथों से,
मुस्काकर मेरे मुख से घूंघट खोला था,
तुमने जिस दिन प्रिय कहकर मुझे पुकारा था,
धरती का कण-कण प्रियतम प्रियतम बोला था,
तुम जिन मादक सांसों का बंधन तोड़ गए,
मैं अब भी उनका स्वाद लिया करती हूं।

****

है उजड़ चुका अब तो मेरे तन का उपवन
पर एक दिवस इसमें बसंत भी आया था,
जब रंग-बिरंगे फूल खिले थे डाली पर,
तुमने भंवरे का वेश अजब दिखलाया था,
तुम जिन गुंजारों से अकुला कर दौड़ गए,
मैं अब भी उन पर जान दिया करती हूं।।

****

तुमने अपने जीवन का मार्ग बदल डाला,
तो क्या है यह तो हर भँवरे की बातें है,
मैं तो कोमल कलिका हूं ओस लुटाऊंगी,
तुम खेलों मेरे पास अंधेरी रातें हैं।
तुम जिन घड़ियों में मुझ से नाता जोड़ गए,
मैं उन घड़ियों से बात किया करती हूं।

****

तुम को नित नूतन प्यार मिले भगवान करे,
मेरा क्या मैं तो अंधकार में जी लूंगी,
तुमने जो मुझको आँसू का उपहार दिया,
जीवन की प्यास बुझाने को वह पी लूंगी,
तुम प्रणय सूत्र के निर्मल तार मरोड़ गए,
मैं उन तारों से हृदय सिया करती हूँ।

****

2/113-75 नारी भावना का कोमल गीत रचना : 1.3.65

विधवा

श्वेत कफन में लिपटी जीवित चलती फिरती लाश,
देख रही भीगे नयनों से, बाहर का उल्लास।
सदा आत्म विस्मृत, चिर चिंतित, आंधी में उड़ते पल्लव सी,
छूट गया हो जिसका आश्रय, और समय की आँधी जिसको
लिए जा रही साथ।

****

कभी न पूरे होंगे सपने, कभी न होंगे साजन अपने,
चिर सूनापन मौन चिता सा, हँसने के दिन थे निष्ठुर,
तुम रहे नहीं क्यों पास।

****

लम्बी राहें, ठंडी आहें, शिथिल पड़ी ये सूनी बाहें,
हमने कभी न सोचा था यह, प्रणय-पाश भी कच्चा होता,
यह कैसा अभिशाप।

****

गए प्राण! तुम बेदर्दी थे, मैं अनाथ, पर छोटी कलियाँ,
बिना सम्भाले खिल न सकेगी, इसीलिए मन मार जिऊंगी
जटिल स्नेह का पाश।

****

देख रही हूं व्यस्त जगत को, यह अबाध गति है सरिता की,
दुख में व्याकुल सुख में चंचल, बांध न पाते इस जगती को,
पतझड़ और मधुमास।

****

4/22-76 परिवार नियोजन गीत रचना : 5.11.78

यदि हम तुम नादान न होते .....

यदि हम तुम नादान न होते, तो अनचाही बात न होती,
जीवन का मधुमास न लुटता, आँखों से बरसात न होती।

****

याद करो वो भूली बातें, रस भीनी मनमोहक रातें,
सपना बनकर आज रह गई, वो रिमझिम सुख की बरसातें,
काश! कि इस छोटे से घर में शिशुओं की बारात न होती।

****

वह असीम आँगन का वैभव, वे सुंदर साधन जीवन के,
अपने ही अनजाने पन में, शूल बन गए फूल चमन के।
जरा समझ होती तो फिर यह बोझिल सी सौगात न होती।।

****

आज पिसे जाते हो तुम भी, और मुझे भी चैन नहीं है,
शनैः शनैः सब शून्य हो चला, अब सुख के दिन रैन नहीं है,
कितना सुखद सरोवर होता, यदि यह झंझावत न होती।।

****

यह जीवन भी क्या जीवन है, पलभर भी आराम नहीं है,
रो धोकर भी जीत सकें हम, यह ऐसा संग्राम नहीं है।
सावधान रहते यदि कल हम, आज अंधेरी रात न होती।।

****

तुम्ही बताओ इस पतझड़ को, कैसे हम मधुमास बनाएँ,
दो रोटी दस खाने वाले, क्या खाएँ किस भांति बचाएं।
कितना निर्मल जीवन होता, यदि धूमिल औकात न होती।।

****

8/10-77 पारिवारिक परिवेश का कोमल गीत रचना : 1.7.85

बहिन की विदाई

धीरे-धीरे रथ मे बहना मोरी पग धरो री,
तज बाबुल का द्वार, साजन आए आंगना री।

****

रूण झुण रथवा बहना मोरी चल दियो री,
सखियन भई उदास, अब के बिछुरे कब मिलें री।

****

नयन भिगोए बहना तोरे बाबुला री,
मैया भई अधीर, पिया घर चाली लाडली री।

****

प्रियतम नैया बहना मोरी काठ की री,
सास ससुर पतवार भव-सागर से तरन को री।

****

सब की सेवा बहना मोरी कीजियो री,
महक उठे परिवार स्वर्ग बसाओ सासुरे री।

****

तन मन निर्मल बहना मोरी राखियो री,
सुख देंगे करतार, अब के सावन, फिर मिले री।

****

9/703-78 कुंठा केन्द्रित गज़ल रचना : 15.8.05

सदा एक जैसा निर्मल संसार नहीं होता

कुंठित मन में करूणा का संचार नहीं होता,
इसीलिये हर गीत जिगर के पार नहीं होता।

****

हीरे मोती जड़ा गगन है उनकी आँखों में,
अतिशय सुंदर स्वप्न सदा साकार नहीं होता।

****

सावन का अंधा है, वह बेचारा क्या जाने,
हर मौसम में हरा भरा गुलजार नहीं होता।

****

जो गुलाब की मुस्कानों में खोए रहते हैं,
उनकी नज़रों में गुलाब का ख़ार नहीं होता।

****

जिसकी किस्मत में तिल-तिल कर जलना होता है,
उस दीपक को शिकवे का अधिकार नहीं होता।

****

पवन आग को भड़काती है, दीप बुझा देती,
बलहीनों के लिये कोई आधार नहीं होता।

****

बिना ज़र्व वीणा में कोई गीत न गूँजेगा,
टूटी मिज़राबों से झंकृत तार नहीं होता।

****

खुशियों के अंबार कभी आँखों में आँसू हैं,
सदा एक जैसा निर्मल संसार नहीं होता।

****

7/8-79 आशा केन्द्रित सांत्वना रचना : 3.9.75

कुछ न बिगड़ेगा तेरा

कुछ न बिगड़ेगा तेरा प्रभु की शरण जाने के बाद,
हर खुशी मिल जाएगी, चरणों में झुक जाने के बाद।

****

जब तलक है भेद मन में, कुछ नहीं बन पाएगा।
रंग लाएगा ये साधन, भेद मिट जाने के बाद।।

****

फूल से पूछो कि उस पर किस तरह छाई बहार,
कब तलक कांटों पे सोया, डाल पर आने के बाद।।

****

प्रेम की मंजिल के राही, कष्ट पाते हैं जरूर,
बीज फलता है सदा, मिट्टी में मिल जाने के बाद।

****

देखकर काली निशा को, ऐ भंवर ! मत हो उदास,
बन्द कलियाँ भी खिलेंगी, रात ढल जाने के बाद।।

****

हो हृदय निष्पाप निर्मल, नाम ले भगवान का,
सूखी बगिया भी खिलेगी, ऋतु बदल जाने के बाद।

****